B/H 49

Dirk Fangel

De [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

॥ श्रीः ॥

जगत्प्रसिद्ध नाटककार शेक्सपीयर के प्रसिद्ध नाटक

मरचेन्ट आफ वेनिस का प्लाट

दिलफ़रोश नाटक।

(बम्बई की पारसी नाटक कम्पनियों का एक मशहूर खेल)

जिसे

शोस्थ, उपन्यासबहार आफिस के मालिक बाबू जयरामदास-
प्र ने नाटक-प्रेमियों के विनोदार्थ, बहुत व्यय और परिश्रम
के उपरांत, अपने मित्र मुन्शी जलालअहमद 'शाद'
लेट आथर, दि टाइम्स थियेट्रिकल कंपनी आफ
कलकत्ता, वर्तमान आथर दि न्यू पारसी थिये-
ट्रिकल कम्पनी आफ बम्बई से प्राप्त कर
नागराक्षरों में सम्पादित और
प्रकाशित किया।

[All rights reserved]

काशी।

हिमालयन प्रेस के प्रोप्राइटर बाबू माधवप्रसाद
रेगमी द्वारा मुद्रित।

द्वितीयबार १०००] फरवरी सन् १९१६ [मूल्य ।=)

N.S.S. \
Acc. No. 1988/400
Date 24.5.88
Item No. B/H/59 old
Don. by B S Mehta

खुलासा तमाशा।

पहिला एक्ट—पहिला सीन

कासिम अपने बड़े भाई महमूद के ज़ुल्म व सितम पर अफसोस करता है; क्योंकि उससे कह दिया जाता है कि, बाप और मां की मिलकीयत पर बावजूद एक सआदतमन्द औलाद होने पर भी तुम्हारा कोई हक़ नहीं है। लेकिन नमकहलाल मसऊद नामी हबशी गुलाम तसल्ली और सल्लाह देता है कि, वह अदालत में उसपर नालिश कर दे; नहीं तो एक मरतबा और बड़े भाई के पास जावे। दूसरा सीन—महमूद ज़िन्दगी और नौजवानी का मजा लेता रहता है; ठीक उसी वक़्त कासिम आख़िरी रहम के लिये आता है। मगर उसकी तमाम गुज़ारिशें हिर्स की आग से जला दी जाती हैं। और वह धक्के देकर बाहर निकाल दिया जाता है। इस अरसा में महमूद को मिश्र का एक इश्तिहार हाथ आता है, जिसमें बतौर वसीयत के यह तहरीर था कि, तिलस्मी सन्दूकों में मशहूर महज़बीन शीरीं की तसवीर है, जो शख़्स सब से पहिले तसवीर वाली सन्दूक को पहिचान लेगा, उसी से शीरीं की शादी की जावेगी। महमूद इसी गरज़ से मसऊद को साथ लेकर मिश्र के लिये रवाना होता है। तीसरा सीन—दिल दुखे कासिम का अपने दोस्त ज़ार नामी सौदागर से अपनी मुसीबत सुनाना और अपना मंशा मिश्र जाने और शीरीं से मिलने का बयान करके सफर खर्च से तहेदस्ती दिखलाना। ज़ार का उसे ज़ालिम शायलाक़ यहूदी से छः हज़ार रुपये अपनी ज़मानत पर कर्ज़ दिलवाने का वादा करना। चौथा सीन-शायलाक़ यहूदी की ख़ूबसूरत बेटी तिलद्दा, जो एक मुहसिन नामी शख़्स से मुहब्बत

रखती है, फिराके यार में बेक़रार नज़र आती है; इस असना में मुहासिन आता है और खुशी से तिलहा का दिल बाग़बाग़ हो जाता है। पाँचवाँ सीन—ज़ार व कासिम कर्ज लेने के लिये शायलाक़ यहूदीके पास आते हैं, मगर चूंकि ज़ालिम शायलाक़ को मुसलमानों से पुराना कीना और नफरत है, इस लिये यह शर्त लिखवाता है कि अगर मुक़र्ररह मियाद पर रकम मय सूद अदा न की गयी, तो जामिनदार के सीने का आध सेर गोश्त काटकर ले लेने का हकदार होंगे। छठवां सीन—खौफनाक डाकू खुशियाँ मनाते रहते हैं कि, सरदार की बीबी दो मुसाफिरों के सराँय में आने की इत्तला देकर उनको अपने साथ ले जाती है। सातवाँ सीन—महमूद मय मसऊद के सराँय में आता है और बेफिक्री से शराबो कबाब में मशग़ूल हो जाता है। आठवाँ सीन—मसऊद का खतरे और खौफ से परेशान होना और महमूद को सराँय के मालिक डाकुओं की तरफसे आगाह करना; मगर महमूद का नाच रङ्ग के आगे इधर मुतलक ध्यान न देना। आखीर मसऊद का सबको नशे में चूर देखकर सराँय में आग लगा देना और खुद जान बचाकर भाग जाना। ड्राप।

दूसरा एक्ट; पहिला सीन—शीरीं का फिराक कासिम में बेकरार नज़र आना: सराँय से भागे हुए मसऊद का पहिले मिश्र में दाखिल होना और शाहाना लिबास में शीरीं के मकान पर जाकर शादी का पैगाम देना। मगर शीरीं की तेज गुफ्तार और शोख सहेली सलीमा से मुठभेड़ होते ही घबरा जाना और शीरीं के ऐवज सलीमा पर ही दिल खो बैठना। आश-नाम्र गुफ्तगू में उसके मुँह से कासिम का नाम सुनकर शीरीं का मुतहैयर होना और उससे कासिम को लाने के लिये कहना। मसऊद का इस शर्त पर कासिम को लाने का वादा करना कि

उसकी शादी सलीमा से कर दी जाय। दूसरा सीन—दर्द मुहब्बत की सतायी तिलहा, मुहसिन के फिराक़ में बेचैन नज़र आती है और उसका सख्त दिल बाप उसकी मुहब्बत पर सख़्त नफरत जाहिर करता है। और बेटी के माकूल जवाबात से गज़बनाक होकर उसे घर में कैद कर देता है। तीसरा सीन—आवारागर्द महमूद शीरीं के पास शादी के लिये आता है; मगर शीरीं उसके अचानक आमद से घबरा सी जाती है और मसऊद की बतायी हुई तदबीर से शराब पिलवा कर उसे अक्ल से खारिज बनवा देती है। जिसका नतीजा यह होता है कि महमूद सन्दूक के इन्तखाब में चूक जाता है। चौथा सीन—महमूद का अपनी नादानी और बेवक़ूफी पर सख्त अफसोस करते नजर आना। पाँचवा सीन—मसऊद का नजूमी बनकर कासिम और मुहसिन के पास आना और उनको खूब बनाना। बाद को यह वादा करना कि तिलहा को नजूमी बनकर शायलाक़ के घर से उड़ा लायेगा। छठवाँ सीन—शातिर मसऊद का नजूमी बनकर शायलाक़ को सख़्त धोखा देना और उससे तिलहा के जुनूं के इलाज में यह तदबीर बतलाना कि एक शब को वह तिलहा को अकेले मंदिर में छोड़ आवे। बेवक़ूफ बाप का इस हिमाकत पर राजी हो जाना। सातवाँ सीन-शायलाक़ का मय एक नौकर के तिलहा को मंदिर में छोड़ आना और थोड़ी देर बाद मुहसिन वगैरह का आकर उसे भगा ले जाना। इसके बाद शायलाक़ का मंदिर में जाना और सफाचट मैदान पाना। आँठवाँ सीन—रास्ते में शराब के नशे में जहाज के खलासियों का गाना। नवाँ सीन—शायलाक़ का खबर पाकर उस वक़्त बन्दरगाह में पहुँचना, जिस वक़्त मुहसिन और कासिम का जहाज लँगर उठा चुका था। ड्राप। तीसरा एक्ट; पहिला सीन—कासिम का शीरीं के पास आना और सन्दूकों

के इन्तखाब में बाजी जीत ले जाना। दूसरा सीन—कासिम के वक्त पर रुपया न अदा करने से ज़ार का गिरफ्तार हो जाना। तीसरा सीन—कासिम का ज़ार के गिरफ्तारीकी खबर पाकर उसकी रिहाई के लिये मिश्र से रवाना होना। इसके बाद शीरीं का भी वकील बनकर मय अपनी सहेली सलीमा के जाना। चौथा सीन—ज़ार की जिल्लत पर शायलाक का खुश होना; मगर दफतन यह खबर सुनकर परेशान हो जाना कि कासिम ने अदालत से जमानत पर उसे छुड़ा लिया है। पाँचवाँ सीन—ज़ार व कासिम का अफसोस करते नजर आना। छठवाँ सीन—कोर्ट में मुकद्दमे की सुनवाई; शायलाक का बावजूद वकील और जज के समझाने पर भी अपनी वहशियाना शर्त पर अँड़े रहना और गोश्त तराशने पर जिद्द करना। शीरीं व सलीमा का वकील व मुहर्रिर के लिबास में आना; मुकद्दमे की दोबारा पेशी, शीरीं की बहस और आखिर कानूनी गिरफ्त और माकूल उजरात का अड़ँगा लगाकर ज़ार को उस आफत से बचाना और उलटे शायलाक को जुर्म के जाल में फँसाना। बाद जुगदाद के कानून के मुताबिक उसकी कुल जायदाद का मालिक मुहसिन को बनाने पर मजबूर करना। सातवाँ सीन—तलबाने में शीरीं का कासिम से और सलीमा का मसऊद से अँगूठी ले लेना। आठवाँ सीन—शीरींका कासिमसे पहिले मिश्रमें पहुँचना और अँगूठी के लिये अजीब जरीफाना छेड़छाड़ और जोड़-तोड़ की बातें हो कर मुअम्मे का हल होना और आखिरी जश्न शादी पर तमाशे का एखतेताम पाना।



दिलफरोश।

अंक पहिला । सीन पहिला ।

रास्ता।

(कासिम का खुदाकी हम्द करते हुए दिखाई देना।)

गाना।

कासिम—तोहें जप जप के सदा करीम शाद होवें। जानो
माल हमरो तुझ पै निसार सब ऐ खालिक,
तोहें ध्यान अगर ज़र पर करे, भाई यार सदा
हासिद बने। दुःखी हो सबका मन, समझ
क़ातिल अक़ारिब को। करो तुम करम ऐ खालिक॥
तोहें०—

या इलाही! बाग दहर में यह कैसी बादे मुख़ालिफ़ चली है, जिससे हर गुल को बेकली है। हाय! बड़े भाई की यह कज़-अदाई, अपने छोटे भाई से बेवफ़ाई; वालिद मरहूम की कुल जायदाद पर अपना क़ब्ज़ा कर लिया; मेरा हिस्सा तक छीन लिया:—

जिसको हम समझे थे अपना, वह है सरका दुश्मन।
जिसमें चाहत थी, वह है खून जिगरका दुश्मन॥

चैन दमभर नहीं देता है बशर का दुश्मन।
घरमें रहने नहीं देता कभी घर का दुश्मन॥

(मसऊदका दाखिल होना)

मसऊद—आदाब अर्ज हुजूर!

कासिम—बस चुप हो; मुझे न सताओ; यह तमस्खुर के अलफाज़ न सुनाओः—

हुजूर वह है जो रखता है दिल कसाई का।
हुजूर वह है जो जब्त करे माल भाई का॥

मसऊद—गो आप भाई की नज़र से दूर हैं; मगर मेरे लिये हुजूर नज़दीक हैंः—

भरा वफा व कुदूरतसे जिस्का सीना है।
हुजूर सच्चे हैं, बेशक वही कमीना है॥

मगर आप क्यों करते हैं मुरव्वत; क्या बंद हो गई हाकिम की अदालत। बस, नालिश कर दीजिये; अपना निस्फ हिस्सा ले लीजिये।

कासिम—नहीं, यहतो मुझसे हरगिज़ न होगाः—

टलता नहीं हरगिज़ कभी तकदीर का लिखा।
तदबीर से क़िस्मत की बुराई नहीं जाती॥
बिगड़े हुए जो काम हैं, बन जाते हैं अकसर।
बिगड़ी हुई तक़दीर बनाई नहीं जाती॥

अब यहां रहना नहीं गवारा है; कहीं सफ़र का इरादा है

मसऊद—इस इरादे के लिये फिर नक्दे ज़र भी चाहिये;
कुछ सफ़र के वास्ते ज़ादे सफर भी चाहिये।

आप मेरी अर्ज़ समाअत फरमावें, एक मरतबा और भाई के पास जावें। शायद वह कुछ बरसरे रहम हो जावें।

क़ासिम—उस नाहक़शनास से उम्मीद तो नहीं। मगर तेरी राय को आज़माता हूँ; एक मर्तबा और जाता हूँ:—

जाके रहते हैं बराफ़रोख्ता ख़ातिर उनसे।
किस्सा ग़म का सुनाने को हैं हाज़िर उनसे॥
क्या अजब तर्ज वफा होवे, जो सादिर उनसे।
करते हम अपनी परेशानी हैं ज़ाहिर उनसे॥
कहने जाते तो हैं, पर देखिये क्या कहते हैं।
कुछ करम करते हैं या देखके चुप रहते हैं॥

(क़ासिमका जाना।)

मसऊद—क्या जहाँसे एकलख्त ईमान्दारी उठ गई।
उठ गई अब मुन्सफ़ी दुनिया से सारी उठ गई॥
है बिरादर को बिरादर से दग़ा यह हाल है।
एक क़लम दुनियांसे रस्में दोस्तदारी उठ गई॥

तौबा है, मेरे रौशन दिलों में यह मलामत कि भाई को भाई से नफ़रत! अहा, किसीने सच कहा है:—

छोड़ो इन बुर्दाफ़रोशों को, कहां के भाई।
बेंच ही डालें जो यूसुफ़सा बिरादर होवे॥

खैर, अगर मैं ज़िंदा रहा तो मैं मियां महमूद को इस हक़-तलफ़ी का मज़ा चखाऊंगा। सच्चे को सच्चा और झूठे को झूठा कर दिखाऊंगा। (मसऊद का जाना)

अंक पहिला । सीन दूसरा ।

सजा हुआ महल।

(महमूदका शराब पीते हुए नजर आना; सहेलियोंका नाचना और गाना।)

आई बहार, बहार मज़े उड़ाओ, हां मै ख्वारो,
नाचो मोहनियाँ, गाओ सजनियाँ,
प्यारी सोहनियाँ, न्यारी कामिनीयाँ,
सरदारी पर निसारी, बारी बारी, वारी वारी,
बलेहारी, सारी हैं निसारजान,
प्यारी प्यारी, जान मान शानसे,
मैं वारी आन वान, सूरतान ज्ञानसे।
मैं वारी बारी आन बान सूर तान ज्ञान से।
तत्त थई, तत्त थई, तत्त धा किट, धमकिट ताल,
छम छम छम समगत चाल,
इशरत बरसत हर हर बार॥ आई आई बहार०—
(मसऊद का आना।)

मसऊद—(आपही आप) दौलत पातेही फूल गया; ऐशो निशात में यह सब को भूल गया। यह मियां महमूद के पीरेमुगाँ का मकान, आलीशान, शराब की दूकानः—

हमेशा है जाम हाथ में,
और बगल में बोतल शराब की है।
हमारे भी साथ तुमने साहेब,
गरज के मिट्टी खराब की है॥

है रोजे शब दौरे सागरमये,
अजब यह हालत जनाबकी है।
न खौफ़े दोज़ख, न फिक्रे जन्नत,
न फिक्रे रोजे हिसाब की है॥

महमूद–है फिक्र रोजे हिसाब किस्को,
गुनाहका यह हिसाब कैसा।
कहां की दोज़ख, कहां की जन्नत,
अजाब कैसा, सवाब कैसा॥

चढ़ा लिया जब कि सागर मय,
तो फिर ख्याले अजाब कैसा।
कहाँ का मरना, कहाँ का जीना,
सवाल कैसा जवाब कैसा॥

(महमूद का शराब पीना)

मसऊद–हत्त तेरे की, यह तो और भी गटागट उड़ाने लगा।

(कासिम का आना)

कासिम–गुलशनमें हरे होके, शज़र लाये समर भी।
ऐ अब्रे करम, हां कोई छींटा तो इधर भी॥

गैरों से है बातें भी मोहब्बत भी नज़र भी।
गुल फेंके हैं औरोंकी तरफ बल्के समर भी
ऐ खाने बरअन्दाज़ चमन, कुछतो इधर भी॥

महमूद–यह कम्बख्त गुल में खार, शराब में कफे मार, फिर आन पहुँचा नाहज़ार :—

बेइज्जती अब भी तेरी जाती नहीं कम्बख्त।
कुछ शरमो हया दिलमें समाती नहीं कम्बख्त॥
किस्मत भी गला तुझसे छुड़ाती नहीं कम्बख्त।
क्या मौत भी दुनियाँ से उठाती नहीं कम्बख्त॥

कासिम–भाई, हम और आप एक ही खून से पैदा हुए हैं; एक पेटमें पले और एक ही जगह परवरिश पाई और फिर यह कज़अदाई?

महमूद—अरे ओ कम्बख्त, तूने वालदैन की याद दिलाकर मेरे भूले हुए ग़म को फिर ताजा कर दिया। हाय! मैं ऐसे मुश्फिक वालदैन कहा पाऊँगा। (शराब पीता है)

कासिम–बेशक, मुझसे बड़ा कुसूर हुआ। वालदैन का ग़म आपको न होगा तो और किसे होगा :—

आपकी नजरोंमें अब हमतो समाते भी नहीं।
अब वह रिश्ता भी नहीं और वह नाते भी नहीं।
होके बेरहम यतीमों को सताते भी नहीं।
बल्कि सायल को तो यों दर से हटाते भी नहीं॥

महमूद—होश उड़े जाते हैं; जिगर के टुकड़े हुए जाते हैं।
(शराब पीना)

मसऊद-(खुद से) वाह बे, क्या मक्कार है, कैसा वाल दैन की याद में बेजार है।

कासिम-हमेशा मुफ्लिसों को फैज़ ज़रदारों से मिलते हैं।
शुजाए शम्स से ज़र्रे बहुत तारों से मिलते हैं॥
चमनमें एक जा गुल किस तरह खारोंसे मिलते हैं।
मसीहा भी कभी तो अपने बीमारों से मिलते हैं।

महमूद-भला जरदार कब दुनिया में नादारोंसे मिलते हैं।
चमकते हैं बहुत ज़र्रे पै कब तारों से मिलते हैं॥
गुलोंको फायदे किस दिन, भला खारोंसे मिलते हैं।
मसीहा खुदहै, दीवाने! जो बीमारोंसे मिलते हैं॥

(गाना)

कासिम—हमसे खफा क्यों हो,
गमके जो मारे को जो दुश्मन जाना है।
दिल में जरा सोचो, हमसे खफा क्यों हो।
हम से सुन मन्शा, तेरे पैरों पड़ूं भाई,
कर न उदास निराश विचारे को॥ हमसे०—

(गाना)

महमूद-चल चल नटखट झट हट जा, यां खट पट मत कर, तू बरजा। दूर दूर मूजी बेइज्जत तू न कर न कर मत शोर शरजा। चल जा पाजी, हट जा पाजी, चल जा चल जा चल हट हट जा। दूर हो

ऐ बद लगाम, छुपा सूरत हराम, यह तेरा बेहया
रूस्याह अब मुझे न दिखा। चल चल०—

कासिम—वफ़ाशआर तरीके वफ़ा को भूल गये।
सुरूर ऐश में खौफे ज़ज़ा को भूल गये॥
नशेमें मै के फिर आखिर कज़ा को भूल गये।
खुदा की शान है बन्दे खुदा को भूल गये॥

महमूद—कुछ न बस जब चला त्योवरी बदल कर रह गया।
और न जब कुछ हाथ आया, हाथ मलकर रह गया॥
दिलही दिलमें किस लिये अपने मचलकर रह गया।
चल निकल किस वास्ते दो गाम चलकर रह गया॥

कासिम—जमाने में किसीके काम जो आये वह कम निकले।
जिन्हें समझे थे हम अपना वही तो पुरसितम निकले॥
जो तेरे मैकदे को छोड़कर हम बाअलम निकले।
दोबारा तेरे घर आनेकी फिर खाकर कसम निकले॥
निकलना खुल्द से आदम का सुनते आये हैं लेकिन।
बहुत बेआबरू होकर तेरे कूंचे से हम निकले॥

(कासिम का जाना)

मसऊद—मुस्तआर वफ़ाये जिंदगी पर बशर किस कदर सरशार है; वह जर्रह दौलत का कैसा खुमार है। भाई का हक छीना, देखा दुश्मनी का कीना; खैर, मैं कभी समझ लूंगा; इस बेईमानी का एवज दूंगा।

महमूद—अरे मसऊद, उधर क्या खड़ा है ?

मसऊद-ओहो ! क्या धर्मसे काम लेता है। अच्छा, देखा जायगा। (महमूद से) क्या हुक्म है, हुजूर !

महमूद-(इश्तेहार दिखाकर) देखो, यह इश्तेहार पुर-बहार इसमें मिश्रके सौदागर की शर्त है आशकार । यानी वह यों लिखता है कि, दुनिया में हर चीज फिना होने वाली है। फक्त जातबारी हवादिस से खाली है। मेरी उम्र का जाम लबरेज हुआ; फर्ज जिंदगी राहे अदमकी तरफ तेज हुआ। अपने दुख्तर के ब्याहने की हसरत लिये जाता हूं; सिर्फ खुदा के भरोसे पर अपनी तमन्नाओं का सहारा लिये जाता हूं। मेरे बनाये हुए तिलस्मी संदूकों में, मेरी दुख्तर की तसवीर है, जो कोई इसके इन्तखाब में कामयाब हो, वही उसका शौहर लाजवाब हो।

मसऊद-तो आपको हिमाकत ने घेरा है; अजी जनाब, होश में आइये; अभी सवेरा है। कहीं जाना आना नहीं; बेवकूफ लोगों का वहां ठिकाना नहीं। गये तो बेभाव की मरम्मत होगी; मुफ्त में नदामत होगी।

महमूद-तुझ सी भी किसी में जेहालत होगी। मैंने तुझे अपने इरादे से खबरदार किया, या नसीहत करने का अख्तियार दिया।

मसऊद-भला क्यों, अगर वह संदूक मैंने छाँटा तो आप की नजरों में हो जाऊंगा कांटा।

महमूद-वह परी, तू देवका बच्चा, जोड़ा तो मिला अच्छा। वह काली काली सूरत और इश्कबाजी, क्यों बे! यह जुबान-दराजी।

मसऊद--अजी साहब, सुफेद कपड़े पर तो फौरन् धब्बा पड़ जाता है; लेकिन काले का क्या जाता है:-

गोरा नहीं है रंग तो कुछ इसका ग़म नहीं।
पर तुमसे नाक नक्शे में मसऊद कम नहीं॥

महमूद—अच्छा जल्द सामान सफर की तय्यारी, कर जवाहिर पोशाक भारी भारी॥

(महमूद का और सहेलियोंका जाना;मसऊदका रोक कर छेड़ना)

मसऊद-अरे ठैरो ठैरो, तुम सब कहां जाती हो, इधर आओ, पहिले मेरे पाँव दबाओ, फिर जाओ।

सहेली पहिली—वाहरे मुये, क्या कुछ शामत आई है!

सहेली दूसरी—शामत नहीं; मलामत आई है।

सहेली तीसरी—मलामत नहीं; कयामत आई है।

मसऊद-वाहरे पुतलियां बनाने वाले कारीगर की उस्तादी; एक ने कूका सब ने सदा दी।

सहेली चौथी—अरे, हम तो कुदरती पुतलियां हैं, रश्क हूरो परी, हुस्नमें नजाकत भरी, जरा अपना मुंह तो देख।

सहेली पहिली-मुए का पेट तो देखो, जैसे फटा हुआ ढोल।

सहेली दूसरी-और सूरत तो देखो, जैसे भरा हुआ तारकोल।

सहेली तीसरी—पेट तो देखो, जैसे घास का गट्ठा।

सहेली चौथी-और जिस्म तो देखो, जैसे आबनूसका लट्ठा।

सहेली पहिली-और दांत तो देखो, जैसे इमली का चपटन।

सहेली दूसरी-और आँख तो देखो, जैसे देवली का टूटन।

मसऊद-और मुँह तो देखो, जैसे चाँद का टुकड़ा।

गाना।

सहेलियां—दूर दूर मूज़ी को; निकल निकल निकल निकल
जा। मचल संचल निकल जा। खलल न कर
संभल जा। जाके मर जाना खाक में। कर न
खिजल दूर हो जा।
मसऊद—झटक मटक चटक पटक सटक अटक लटक जा।
सहेलियां—ओ गुलाम बेलगाम खाम, अलग सरक जा।
मसऊद—तौबा, तौबा, तौबा। करो न बतियां; जार की
घातिया; चचल चपल कटन छतियां।
सहेलियां—हमसे दम न चलत चलत।
मसऊद—तुमसे हारा हारा ख्वाहमख्वाह॥ दूर दूर०—

महमूद—तुम मेरी तारीफ क्यों करते हो। जाओ, जाओ, तुममें से मुझे एक भी पसंद नहीं। तू बहुत मोटी है; तू बिलकुल छोटी है। (सहेलियों का जाना)

मसऊद—अब मैं सफर की तैयारी करने जाता हूं। (शराब की पेटारी लाकर) यह हमारे जनाब का सामान सफर है। पड़े किस शराबी के पाले; बोतल के काग को खोलते खोलते हाथों में पड़ गये छाले।

गाना।

यह इंग्लिश बरांडी शिराजी अगूरी, यह है बीयर तासीरदार। मोहइया है पूरा मयखाना पैमाना उड़ानी ज़माना खुमार। शीरीं खुशगवार, बिसियार, मिकदार, तैयार—यह देसी, यह रासी, यह बासी, यह मीठी, यह

कड़वी दिखाती बहार बराबर है । यह ह्विस्की महुए की उम्दा जौहर है; इसमें के जर हो निसार । यह बन्दर के मानिन्द तुमको नचाये, हो पीते ही खर जिसके मुँह में यह जाये । शिताबी, हो नाजिल खराबी हजार लाचार अन्जामकार । हाँ, शराबी हो आलम में ख्वार॥ है यह इंग्लिश०—

(महमूद का आना)

महमूद—क्यों मसऊद, सामान सफर दुरुस्त है ।

मसऊद—जी जनाब, दुरुस्त है; बन्दा भी चुस्त है ।

महमूद—भला सब सामान कहां कहां रखा है, और क्या क्या चीज है ?

मसऊद—वह देखिये, सामने धरा है । (दोनों का जाना)

अंक पहिला । सीन तीसरा ।

रास्ता ।

(कासिम का आना बहालते मायूसी)

गाना ।

न करे दोस्त येगानों का भरोसा कोई;
सच है, मुश्किल में किसी का नहीं होता कोई ।
बेवफाई से अजीज़ोंके खुला यह उक़दा;
हम हैं दुनियां में किसी के, न हमारा कोई ।
दुश्मने जाँ सब ज़माना हो गया;
अपना जो था वह भी बेगाना हो गया ।

न दम गम का हरदम, बरहम, दरहम, बन हर खमका,
वतन अन धनका दुश्मन बन, निसादिन पल छिन पुर गमदमका
सारे जाहिर नेक बनकर, यार गार ज़र के,
जो यार है मक्कार है ऐय्यार है गद्दार बना ॥

क़तआ।

हाय, भाई ने मुझे हाले बतर छोड़ दिया।
रूह ने जिस्म को और खून ने ज़िगर छोड़ दिया ॥
घर से धक्के दिये और खाक बसर छोड़ दिया।
चश्म उलफत ने भी अब पासे नज़र छोड़ दिया ॥

हाय! वालदैन का फौत होना मेरे लिये अज़ाबे मौत होना, बराबर हुआ। जो बरसरे जौरो सितम मुझसे बिरादर हुआ। तमाम मिलकियत अपने कब्जे में लाया; साथ मेरा हिस्सा भी दबाया। जो रात दिन आप शराबो कबाब में मशगूल है; और छोटा भाई इफलास में गिरफ्तार व मलूल है :-

काम दौरे चर्ख़ में, बिगड़े हुए अकसर बने।
बनकर जब बिगड़े जाये, तो फिर क्योंकर बने ॥

(ज़ार का आना)

ज़ार—अच्छे रहे जनाब? कहो, खैरोआफियत। कैसा है इजतराब, कहो खैरोआफियत। (कासिम से जवाब न पाकर) शायद आपने अभी तक मुझे न पहिचाना?

कासिम—जी हां; बन्दे ने आपको अभी तक न जाना।

ज़ार—अज़ीज दोस्त शरीके अलमको भूल गये।
सहे ये रंज कि अब आप हमको भूल गये ॥

कासिम—नशे में माल के और के ग़म को भूल गये।
मिला जो जाम तो अन्जामे जम को भूल गये॥
जो भाई अपने हकीकी करम को भूल गये।
हम उनको भूल गये और वह हम को भूल गये॥

जार—क्यों, बहकी बातें करते हो; मैं वही दोस्त जार जाँनिसार हूँ।

कासिम—अहा, (गले मिलना) ऐ यार ग़मगुसार, मैं यकीन करता हूँ कि आप मेरी परेशानी का बाइस समझ गये होंगे।

गाना।

जार—दिलपर कुछ गम के आसार है प्यारे।
क्यो होके गुलेतर, है उदास नरगिस तरसे।
हसरत बरसे, कर बयान कुछ हसरत हाल,
मलाल किसके दम से॥ दिल०—
मालदार तुम, जीबकार तुम, आशकार तुम।
आला बरतर से, हमदम हरदम जम जम कर गम।
बरहम करसे दम ओ हमसे। हमसा यार तन मन
निसार कर डाले; घर दर ज़र सर पुरखम सर के॥
दिल पर कुछ०—

कासिम—ऐ मेहरबान, नेकशान, क्या पूछता है; मुझे कुछ नहीं सूझता है:—

फोगा मे, आह मे, फरियाद मे, सेवन मे, नालो मे;
सुनाऊ दर्द दिल ताकत, अगर हो सुनने वालो मे।

गाना।

सुन दोस्त ज़रा तो बलायें मेरी,
हां रे जान सही यह जफायें मेरी। सुन०—
बड़े भाई सदा आराम करें;
इफलास में हम दिन रात मरें।
दुनिया में भरोसा किसपर करें;
जब अपनीही जान सताये मेरी॥ सुन०-
मेरा ऐशो आराम हराम हुआ,
माल बापका जप्त तमाम हुआ;
मुझे छोड़ दिया नाकाम हुआ,
कैसी नागहां है यह सजायें मेरी॥ सुन०—

(शेर)

दिल से मर कर भी न इश्क बुते नादां निकला;
हस्र के रोज भी मैं चाक गरेबां निकला।
क्या हुजूमे गमो हसरत है तेरी फुरकत मे,
नालां भी सीने से निकला, तो परेशां निकला।
मुनहसर मर्ग पै है, अपनी तमन्ना अहसन,
दम निकल जाये तो हम समझें कि अरमां निकला।

ज़ार—हा, यह तो मैंने सुना है कि,तुम अपने बापकी ज़ायदाद पाने से महरूम रहे। मगर तुम्हारे बहुत यार ग़मगुसार थे; बल्कि पूरे पूरे मददगार थे।

कासिम—भाई, वह दस्तरखान की मक्खियां उड़ गई; खाली हड्डियों को तो कुत्ता भी नहीं चूसता :—

एक झोंके ही में सारे उड़ गये मिस्ले मगस।
जो कि शामिल हाल थे हिर्सी पोलावो नान के॥

जार—बेशक; यह कलाम बरतर है। मगर क्या मख़लूक ख़ालिक के सब बराबर हैं? :—

न हरजन जनअस्त व न हर मर्द मर्द;
खुदा पन्ज अगुश्त एकसा न कर्द।
आजमा लीजिये बन्दा भी गो नहीफ ज़ार है;
मगर एक कदीम दोस्त का तावेदार है।

अगर कोई मतलब मुझसे निकल सके तो बशरोचश्म हाजिर हूँ।

कासिम—मुझको न मालोजर की कोशिश है; न हवस दुनिया की ख्वाहिश है। मगर एक और किनार-

जार—कहिये, कहिये; कहे जाइये। वह ऐसी क्या बात है?

कासिम—मिस्र में जो कुँवारी औरत है, पाबन्द वसीयत है। शायद उसके वालिद का दिया हुआ इश्तिहार देखा होगा।

ज़ार—हाँ, एक इश्तिहार तो मेरी नज़र से गुज़रा है। किसी जईफ़ुलउम्र सौदागर ने मुश्तहर किया है।

कासिम—वही जो सन्दूकों मे तसवीर बेनजीर का जिक्र लिखा है।

जार-अच्छा फरमाइये, फिर आपका क्या इरादा है?

कासिम-जब मैं मिश्रमे बराये तिजारत गया था, तो उसकी बाकी बाकी चितवनो ने मुझे मोहब्बत का पैग़ाम दिया था। इससे मुझे पूरी पूरी उम्मीद है, अगर तक़दीर ने बरहमी न की और जमाने ने दुश्मनी न की। लेहाजा सामान सफर दुरुस्त

करने के लिये छः हजार रुपये की जरूरत है। अगर हो सके तो इनायत है।

जार—छः हजार रुपये की क्या हकीकत है; जान तक हाजिर खिदमत है। मगर आप जानते हैं कि, मेरे कुल जहाज इस वक्त समुद्र की सफर में हैं, वरना नक़द जिन्स मेरे पास कौनसी चीज है, जो तुमसे अजीज है। खैर, अंदेशा न करो, मेरी जमानत पर कही से रुपया मिले तो ले लो।

कासिम—आपकी जमानत पर रुपया मिलना कुछ दुश्वार नहीं।

जार—तो मुझे जमानत देने से भी कुछ इन्कार नहीं।

कासिम—शायलाक यहूदी सौदागर आपका हमपेशा है; वह सूद पर रुपया देता है। अगर उससे कहा जाय तो जरूर मकसद बर आये।

जार—यहूदी! यहूदी! मैं इस कौम से नफरत करता हूँ। यह लोग हमारे दुश्मन हैं। शायलाक़ सूदखार, बेईमान, काफिर है। उसके पास मैं रुपया लेने जाऊँगा? नहीं, नहीं; हरगिज नहीं।

कासिम—फिर आपको किससे रुपया मिलने की उम्मीद है?

जार—यह तो सच है। (सोचकर) मगर खैर, मैं तुम्हारे वास्ते उसके यहा भी जाने को हाजिर हूँ। जहाँतक हो सकेगा मैं कोशिश करने में कोई दकीका न उठा रखूगा। अब आप शायलाक़ के पास जावें और उससे दरियाफ़्त फरमावें कि, मेरी जमानत उसे मन्जूर है।

कासिम—तो आपसे फिर मुलाकात कहा होगी?

जार—दो घटे बाद जौहरीबाजार में होगी।

कासिम—फी अमानअल्ला!

जार—खुदा हाफिज। (दोनो का दो तरफ जाना)

अंक पहिला। सीन चौथा।

महल तिलहा।

(तिलहा का गाते हुए आना)

दिले नादा को हम समझाये जायँगे।
हिज मे जिनके जान चली है,
न वह अहले सितम बुलवाये आयेंगे॥ दिले नादां०—
सख्त पत्थर से ज्यादा है, तेरा दिल क़ातिल।
हुई आसान न जाँबाज कि मुश्किल क़ातिल॥
उफ़्फ़ बेदर्दो सितम, पेशो जाहिल क़ातिल।
न किया जिबह, गया छोडके बिसमिल क़ातिल॥
दहने जख्म पुकारा किया क़ातिल क़ातिल।
किसी जखमी जिगरके यह चरके दिखाये जाँयगे॥ दिले०—

गुलशन को भेजे हुए बहुत देर गुजर गई; मगर अब तक न आई? खुदा जाने किधर गई। (गुलशन को आते देखकर) अहा! आई आई, आई गुलशन, क्या खुशखबरी लाई गुलशन। क्यों इतनी देर लगाई गुलशन, खत मेरा दे आई गुलशन?

गुलशन—बीबी साहेबा क्या सुनाऊँ वारी जाऊँ :—

थक गई हू मै बहुत, होशमे आऊँ तो कहूँ;
सोच लू बात जरा, होश संभालू तो कहूं।
ठैरिये बैठिये, आराम जो पालूं तो कहूं॥

तिलहा-वाह ! क्या खूब ! तू आराम जो पाये तो कहे ।
इसको जब आतिश हिजरा से जलाले तो कहे ॥
क्या यही फर्ज है कि कासिद के पयाम दिलबर ।
जब कि आशिकको पयामे अज़ल आये तो कहे ।

गुलशन-आपके आशिक का पता लगाना; क्या आसान काम जाना ?

गाना ।

वाकी खबरिया न पाई मोरी गोइयां ।
मै हारी मै वारी मैं हारी, हाय जान जान । बाकी खबरिया०-
देखा भाला जादू डाला मेरी जान;
ढूंढा सारा नदी नाला हूँ हैरान ।
इधर उधर डगर डगर नजर करत हू हलकान ।
दुशवार था दुशवार था दुशवार था मेहरबान ॥
बनके जासूस की तलाश उसे घर दर में ।
पर कहीं उसका पता न पाया दुनिया भरमे ॥
जा निसार वेशुमार है न जार कदरदान ॥ वाकी०-

तिलहा—उस माहरू का नामा जो लाया है, इसी लिये पहुँचा है, नामवर का दिमाग आसमान पर ।

क्या तू अब भी न बतायेगी, या तू हमे बातों ही में उड़ायेगी या कुछ पता भी बतायेगीः—

क्या कहा, पाया भी उस बानिये रुसवाई को ।
खत दिया याकि नहीं दिलबरे रानाई को ॥

गुलशन-अच्छा अच्छा, समाअत फरमाइये;न घबराइय।

जब मैं मुहसिन को तलाश करते करते उनके पास पहुँची, तो क्या देखती हू, आपके चाहनेवाले निराले, मतवाले, दरिया के किनारे बैठे मौजे मार रहे है। मैंने आपका खत दे दिया और साथ ही यह जवाब भी लिया। (तिलहा को खत देना। तिलहा का खत खोलकर देखना)

तिलहा—अहा! खत मे आठ बजे का वादा लिखा है; मगर अब तक न आने की क्या वजह है:—

मेहनतें वह मेरी बरबाद किया करते हैं।
झूठे वादों से ही दिलशाद किया करते है॥

गुलशन—लीजिये, यादश बखैर। आपके चाहने वाले, निराले, मतवाले, वह आ रहे है। अब मैं जाती हू।

(गुलशन का जाना; मुहसिन का आना।)

मुहसिन—प्यारी, कैसा इजतेराब है, कैसा पेचोताब है:-

तसव्वर में आ आके देती है बोसे हमें;
प्यारी प्यारी यह सूरत किसी की।

तिलहा—खबरदार, हाथ न लगाना जानहार।

मुहसिन—ऐ दिलदार, गुले रुखसार।

(गाना)

तिलहा–जानी नूरानी, लासानी सुरतियां।
प्यारी दिलदारी की सारी हैं बतियां।
जादूसा डारा है आँखों में प्यारी,
पलकों ने मारी कटारी जान॥

मुहसिन—हलके हलके मनमें तनमें॥ जानी लासानी०—

आशिकों का दिल जलाना क्या यही मुनासिब था?

तिलहा—हटो जी, वहीं जाओ। चले क्यों नहीं जाते। यहां क्यों हो आते जी। मुझको सताते, जली को जलाते, चले क्यों नहीं जाते।

मुहसिन—अल्लाह रे जानी, यह लनतरानी, है बदगुमानी झूठी कहानी।

तिलहा—क्या बात है, क्या घात है?

मुहसिन—सूरत है, सौगात है।

तिलहा—कौन सी चीज मेरे पास जाना, जो यहां तक आप का हुआ आना। जाइये, जाइये, अपना इलाज करवाइये।

मुहसिन—प्यारी, हमारा इलाज तो है तुम्हारे पास।

तिलहा—मेरे पास कौनसा नुस्खा है जाना।

मुहसिन—शरबत दीदार का पिलाना।

तिलहा—क्या जरूर तरसना तरसाना। यह मेरा मकान है या दवाईखाना?

मुहसिन—अजी दवाखाना क्या, बल्कि सिफाखाना।

तिलहा—तकलीफ बरतरफ। बल्कि पागलखाना।

मुहसिन—ऐ महज़बीन, दिलनशीन, कौन मजनू है इस मकान का मुकीम।

तिलहा—एक छोड़, दो तीन। एक मैं, दूसरा आप, तीसरा मेरा बाप।

मुहसिन—बाप तो तुम्हारा वाक़ई पागल है। उसके दिलमें यह खब्त समाया है कि मुसलमान मेरी दौलत उड़ा ले जाँयगे या मुझे किसी आफत में फँसायेंगे।

तिलहा—आखिर तुम भी हो मुसलमान, सादिक दिलो-जान। गारत गर दीनों ईमान। रात को चोरी चोरी आते हो, माल उड़ा ले जाने की घातें लगाते हो। उसकी लड़की को जुल दिया और दिल लूट लिया।

मुह-हुस्नकी दौलतवालेने बेदिल मुफलिसको लूट लिया
कौन कहे दिलसे अपने, तुमने है जिसको लूट लिया।
तेरे निगहे कातिलने दिलोजां मुहसिनको लूट लिया।
हाय, बुतों ने एक मुसलमान मोमिन को लूट लिया।
तिलहा-भोले नन्हे थे विचारे, हमने जिसको लूट लिया
यह तो नहीं कहते कि एक लड़की कमसिनको लूट लिया॥

मुहसिन—खैर,योंही सही; मैंने ही तुमको लूट लिया। मगर जो माल लूट में हाथ आता है, उसे लूटने वाला ही पाता है तो बस, अब चलिये मेरे साथ।

तिलहा-जाइये जाइये; यह फ़िकरा किसी और को सुनाइये

मुहसिन—जानां के घर से जाना; बस जान से है जाना
जब तुमने कहा जाना, लाज़िम हुआ न आना॥ (लौटना)

तिलहा—अजी ठरो, ठरो, साहेब! इतनी जल्दी न करो।

मुहसिन—अजी छोड़ो जी, छोड़ो। (पकड़ लेना।)

तिलहा—ऐ रश्केमाह, मिलाइये निगाह। अब किसे ताबो तवां बाकी है, और मान बाकी है। फकत एक जान बाकी है।

मुहसिन—क्यों ऐ प्यारी! कब तक रहेगी बेकरारी; इन्तजारी, बेकरारी।

तिलहा—मेरा बाप है मुसलमानों का दुश्मन जानी; लेकिन हो जायगी आसानी। अब जाओ मेरी जान। कहीं आ न जाये वह मूज़ी बेईमान।

मुहसिन—मगर भूल न जाना जान, अपना अहदो पैमान।

तिलहा—जलदी बरआयेगी अरमान, तुम हो मेरीजान।

(गाना।)

मुहसिन—प्यार मोहनियाँ निभाना होगा।

तिलहा—ग़म जो होगा उठाना होगा।

मुहसिन—आशिक को बोसा शीरीं लबों का; देना होगा दिलाना होगा। प्यार०—

तिलहा—भर भर के जामें शराबे मोहब्बत, पीना होगा पिलाना होगा। प्यार०—

मुहसिन—चरचे तो उलफत के येही रहेंगे, हम होंगे जमाना होगा। प्यार०—

(दोनों का गाते गाते चले जाना)

अंक पहिला। सीन पाँचवाँ।

अगला महल।

(शायलाक़ का आना)

शायलाक़—आजकल मुसलमान सौदागरों ने बग़ैर सूद के रुपया दे दे कर मेरा व्यापार बिगाड़ दिया है। यह मेरी सरासर अब्तरी और नुकसानरेज़ी का तौर निकाला है। मगर अब वह मेरे फन्दे में फँसने वाले हैं; मैंने भी उनके लिये खूब दांव निकाले हैं। बुग्ज़, मकर, कीना, हीला, ज़द, फितरत, [illegible]रत, यह सब मेरे अशयार हैं; मुसलमानों से दगा करना मेरा कार है। मैं मजहबी तआस्सुब के सबब उनसे बदज़न हूँ, उनकी जानो माल का दुश्मन हूँ। सुना है कि, कासिम मेरे पास कुछ कर्ज लेने आवेगा, उसके साथ दूसरा भी मेरे कब्जे में फँस जावेगा। (कासिमका आना)

कासिम—आदाब अर्ज, जनाबमन!

शायलाक़—आदाब, आदाब, जनाब! आज गरीबखाने

पर बड़ा करम फरमाया। (अलग होकर) कम्बख़्त, अपनी गर्ज को आया।

कासिम-शायलाक! मुझे छः हजार रुपये की जरूरत है दस्तावेज में तीन माह की मुद्दत होगी और तुम्हारे इतमिनान के लिये मेरे दोस्त ज़ार की जमानत होगी।

शायलाक-(खुद से) अच्छा मौका है। उसी कम्बख़्त से तो मुझे मतलब है। (कासिम से) मियाँ कासिम! घर आपका है, ज़र आपका है, सर आपका है, दुकान आपकी है; बल्कि मेरी जान आपकी है। ज़ार आदमी तो अच्छा है, इन्तखाब है; मगर उसके जहाज समुंद्री सफर में होने से उसकी हालत जरा ख़राब है।

कासिम-इससे आपको क्यों इज़्तेराब है। लीजिये, वह खुद आ गये। (ज़ार का आकर कासिम से इशारे मे गुफ़्तगू करना)

शायलाक़—(अलग होकर) इन दुश्मनों के पके पुलाव में जेरखाक, सीने को इनके खंजरे कीने से करूं हलाक। और किस्सा मुख्तसर यह है कि, किस्सा करूँ मैं पाक। बदला मैं इनसे लूँ तो मेरा नाम शायलाक।

ज़ार—शायलाक़, तुम खूब जानते हो कि मैं सूदी रुपयों का लेन देन नहीं करता। लेकिन मैं अपने वफादार दोस्त के लिये उस पर भी राजी हूँ। इसलिये मुझे छः हजार रुपयों की जरूरत है। (ज़ार का फिर कासिम से मुखातिब होना)

शायलाक—(अलग होकर) अब यह मेरे फन्दे मे फँस गया। मैं इससे बदला लिये बगैर कब छोड़ता हूँ। यह नफरत मेरी कौम से करता है, मेरे हममज़हब लोगों को हिकारत से देखता है। लानत है, मेरी कौम पर, जो मैं इस से बदला लिये बगैर छोड़ दूँ।

ज़ार—शायलाक़ ! किस ख्याल में हो; कुछ सुना भी ने क्या कहा ?

शायलाक़—क्या कहा जनाब, क्या कहा ?

ज़ार—मुझे छः हजार रुपये की जरूरत है।

शायलाक़-जनाब, क्या आप वह दिन भूल गये। जब सरे ाजार मुझे खफीफ किया करते थे। मेरी शान में कुत्ते का ाब्ज इस्तेमाल किया करते थे। मेरे पाक लिबास पर थूंका करते े। लेकिन यह सब मैंने तहम्मुल के साथ बरदाश्त किया; ैसा कि हमारी कौम का खासा है। अब आप अपनी गरज से ेरे पास आये हैं और कहते हैं कि इस वक्त मुझे छः हजार ूपये की जरूरत है। एक कुत्ते से भला आप क्या उम्मीद कर सकते हैं कि क्या एक कुत्ता आपको इस कदर रुपया दे सकता ? आपने कौनसा सलूको एहसान मेरे साथ किया है, जो मैं स कदर रुपया कर्ज दूं।

ज़ार—जिस तरह मैं पहले तुम्हारे साथ पेश आता था, ही वर्ताव अब भी रखता हूं। मैं तुम्हें उन्हीं हिकारत की जरों से देखता हूं, जैसे कि पहिले देखता था। अगर तुम मुझे रुपया कर्ज दोगे, तो कुछ दोस्त समझ के न दोगे। बल्कि एक दुश्मन समझ के दोगे। बहुत जल्द मुझे इसका जवाब दो कि छः हजार रुपया कर्ज दोगे या नहीं ?

शायलाक़—इस कदर गुस्सा न कीजिये। आप तो मेरे मुअजज्ज हमपेशा हैं। भला मैं आपको रुपया न दूंगा तो और किसे दूंगा ? बल्कि हमपेशा होने की वजह से मैं सूद भी न लूंगा। रुपया देने में जो कुछ ताम्मुल था, वह यही कि आप लोग जरा—(रुक जाना)

ज़ार—बस खामोश, हम ऐसे कर्ज़ख्वाह नहीं हैं कि, रुपया

लेने की गर्ज से अपनी आबरू गँवायें।

शायलाक़—(अलग होकर) बात तो बिगड़ चली। (ज़ार-से) वाह, सौदागर साहब! वाह। आप तो बुरा मान गये :—

वाह वा खूब समझे; क्या कहा मैंने, आप क्या समझे।

ज़ार—वादे पर अपनी जान तक देने से दरेग नहीं करते।

शायलाक़—बिलफर्ज, अगर मियाद गुजर जाय?

ज़ार—तुम जो कहो वह।

शायलाक़—फिर पैदा न कोई हो फितूर।

ज़ार—अरे तुम तो हो बेशऊर।

शायलाक़—आप खफा न हों,हजूर! अच्छा,अगर मिआद गुज़र जाय तो आध सेर गोश्त अपने जिस्म का तराश दीजियेगा।

ज़ार—बेशक! बेशक!

शायलाक़—आप यह शर्त दस्तावेज में लिख दीजियेगा?

ज़ार—हां हां, जरूर लिख दूंगा।

का०—गजब क्या जान पर अपनी, यह तुम ऐ जार करते हो।
कि नाहक जान अपनी मुरीदे आज़ार करते हो॥

शायलाक़-(खुद से) यह कैसा बेवकूफ है, जो मेरे बने बनाये खेल को चौपट करता है। (जाहिर) :-

है दिल्लगी के वास्ते, बस शर्त यह लिखी।
बिलफर्ज हो, जो वादे की मियाद मन्कजी॥
ऐसा भी इस जहां में बेदर्द है कोई।
नाहक किसी का खून भी करता है भला कोई।
क्या गर्ज है किसी को बशर को जो खूं करे।

पापोश भी यह मेरी न कारे जबूं करे ॥

ज़ार—हां हां; आप सच कहते हैं।

शायलाक—अच्छा, आप लोग चलिये; दस्तावेज तय्यार रखिये। मैं रुपया लेकर आता हूँ।

ज़ार—बेहतर है। (ज़ार और कासिम का जाना)

शायलाक—ओ शायलाक, आज खूब शिकार फांसा; अच्छा दिया झांसा। मैं इस शहर में सबसे ज्यादा मालदार हूँ. लेकिन यह मुसलमान मुझे हिकारत की नजर से देखते थे। और एक मुसलमान तो मेरी लड़की का है दिलदादा; उसे भगा ले जाने का रखता है इरादा। खैर, उसे भी समझ लुंगा।

(शायलाक का जाना)

अंक पहिला। सीन छठवां।

जङ्गल अगला।

(डाकुओं का आना।)

(गाना)

डाकू—डाकू हैं सारे, है चोरी पेशा रात दिन।
राहगीरों को मारे, हजारों वारे न्यारे ॥
सितमगरी पै हम कमर को बांधेंगे तेग से।
कतल करें वहम, ये सरको लूटें मारें वारे॥ डाकू०—

सरदार—हम कौन हैं? सुनहरी टोली के भाई, रुपहली टोली वाले। वह लोग जो शहर और गली में लूटते हैं, और हम भूले भटके मुसाफिरों पर टूटते हैं। वह तो एक के दो बनाते हैं, और हम एक के चार, दम में करते हैं तय्यार।

डाकू दूसरा–कारवां आया जो यां, आराम पाने के लिये।

बस हस्र तक सोता रहा आराम पानेके लिये॥

सरदार—लेकिन मेरी जोरू भी बड़ी चालाक है।

मुसाफिरों को फांसकर लानेमें बेबाक है॥

डाकू तीसरा–अजी, हम भी चालाक हैं;

लूट मार करते हैं, गजब के बेबाक हैं।

औरत—(अन्दर से) इधर चलो, भाई ! इधर से।

सरदार—खामोश। ऐ बहादुरो ! मेरी औरत वह आती है और अपने हमराह दो शिकार भी लाती है। बस, जाकर तुम सब आड़ में छिप जाओ; जब मैं बुलाऊँ, तब हाजिर होना।

(सबका जाना।)

अंक पहिला। सीन सातवां।

सराय।

(डाकू की औरत के हमराह महमूद व मसऊद का आना)

औरत—सरकार ! देखिये, यही मुसाफिरों का मुकामे कयाम है। यहां सब तरह से राहतो आराम है।

मसऊद—क्यों बड़ी बी ! यहां का कुल सामान औरतों ही के है हवाले, या कोई मर्द भी हैं इन्तजाम करने वाले ?

औरत—ऐ हजूर ! खुदा उसको मेरे सर पर सलामत रखे। पांच सौ बरस की उमर वाले हिनोज मेरा खाविंद मौजूद है। वही मुसाफिरों की खिदमत करता है।

महमूद—तुम्हारा खाविंद कहां है, और क्या काम करता है

औरत—हुजूर, पहिले तो वह भटियारे की दुकान लगाते थे। मगर कुछ दिनों से याद इलाही के अज़हद आरजूमन्द हैं; नमाज़ व रोजा के पाबन्द हैं।

मसऊद—(अलग होकर) भटियारा जो नमाज़ी है: तो ज़रूर दगाबाज़ी है। और यह बुढ़िया दल्लाला की खाला ज़ाहिरा नेक निराली है; मगर ज़रूर कुछ आफ़त लाने वाली है।

औरत—आप लोग यहां बैठिये, हाथ मुँह धोइये; मैं जाती हूं और अपने खाविंद को बुला लाती हूं। (औरत का जाना)

मसऊद—मुँह क्या धोयें, हमतो अपनी जान ही से हाथ धो बैठे हैं। (सरदार को आते देखकर) यह लो, वह शैतान मुजस्सम खुद आ गया। (डाकू सरदार का आना)

सरदार—सुभानअल्ला ! सुभानअल्ला ! सुभानअल्ला !

मसऊद—(महमूद से) समझे आप, यह क्या कहता है। सुभानअल्ला ! अच्छा उल्लू का पट्ठा फंसा है। सुभानअल्ला ! सुभानअल्ला ! सुभानअल्ला !

सरदार-अलहम्दुल्लिलाह ! अलहम्दुलिल्लाह ! अलहम्दुलिल्लाह !

मसऊद-(महमूद से) यह कहता है कि, अलहम्दुलिल्लाह ! बहुत सा माल व असबाब है; किस्मत कामयाब है। अलहम्दुलिल्लाह ! अलहम्दुलिल्लाह ! अलहम्दुलिल्लाह !

महमूद—अबे, तू ये बुजुर्ग की शान में क्या कहता है; खुदा से नहीं डरता है ?

मसऊद—यह ऐसे बुजुर्ग हैं कि एक मुक्की के दांव में तुम्हारी सब दौलत उड़ा लेंगे।

सरदार—माशाअल्ला ! माशाअल्ला ! माशाअल्ला !

मसऊद—बड़े मियां, मशाल लाने की क्या जरूरत है। लूटो न तुम्हारे बाबा का तो ही माल है। लूटो ! लूटो !

सरदार—क्यों मियां, अल्लावालों से भी ठट्ठा।

मसऊद—अबे, चुप बे चुप; मैं जानता हूं तेरे माथेका घट्टा।

सरदार—हुजूर ! क्या यह आपका नौकर है ?

महमूद-नौकर नहीं; बल्कि मेरा महरमेराज है।

सरदार-मगर बड़ा ज़ुबानदराज़ है।

महमूद—बड़े मियां, आपका नाम और काम ?

सरदार-मेरा नाम है करामत; करता हूं रात दिन खुदा की इबादत या आप लोगों की खिदमत। और मैं इस सराय का मालिक हूं।

मसऊद-सराय के मालिक काहे को आप तो हमारी जान के मालिक हैं।

सरदार—अबे, तू बड़ा बेहूदा है।

मसऊद-(महमूद से) जब ही तो यहां आन कूदा है।

महमूद-बड़े मियां, मुझे बावगोले की है बीमारी; हकीम इसका इलाज बतलाते हैं शराबख्वारी।

सरदार-हा हा हा हा-थू थू थू : लाहौलबिला; थू थू थू !

मसऊद—अरे क्या करता जाता है थू थू ; क्या ज़हर पी गया है तू।

सरदार—लाहौलबिलाकूवत ! ऐसी हराम चीज़ छूने को कहता है ?

महमूद—बड़े मियां, हाथ लगाने की क्या ज़रूरत है। इसकी तो एक और सूरत है।

सरदार—वह क्या सूरत है ?

महमूद—लीजिये, यह पाँच रुपया। लाइये एक बोतल शराब और गजक लाजवाब। बोतल रूमाल से बाँधकर लटकाये हुए लाइये; हाथ क्यों लगाइये ?

मसऊद—(अलग होकर) अब इसकी पारसाई का इमतिहान हुआ चाहता है।

सरदार—खैर, आप लोगों की खातिर से यह भी मंजूर है। अच्छा, आप दूसरे कमरे में तशरीफ ले चलिये; वहाँ सब सामान मोहइय्या है। (सब का जाना)

अंक पहिला। सीन आठवाँ।

महल अगला।

(पहिले महमूद का आना; बाद मसऊद का दाखिल होना)

महमूद—क्यों मसऊद, क्या खड़ा सोचता है?

मसऊद—मुझे मालूम होता है, यह सब धोखा है।

महमूद—क्या धोखा मालूम होता है? तू तो बड़ा डरपोक बना जाता है। क्या ऐसा अन्धेर है?

मसऊद—बस, अन्धेर होने में थोड़ी देर है।

महमूद—तू तो योंही बके जायगा।

मसऊद—तो मेरे बाप का क्या जायगा?

महमूद—क्यों मरा जाता है; नाहक घबराता है। क्या कोई घोल के पी लेगा; किस तरह जी लेगा।

मसऊद—जी, हम तो किसी तरह जान बचाकर निकल जाँयगे; लेकिन आप जरूर किसी आफत में आयेंगे:—

तब लों अलम पास हमारे न मालो ज़र।
हमसे खिलाफ होके करेगा ज़माना क्या॥

(डाकू को आते देखकर)

अरे, वाहरे बगुला भगत!

(डाकूका शराब की बोतल एक लाठीमें बांधकर लटकाये हुए आना)

सरदार—तौबा! तौबा! लाहौलबिलाक़ुवत! जो काम अब तक नहीं किया था; आज मेहमानों की खातिर से करना पड़ा।

(महमूद से) लीजिये, यह शराब की बोतल और गज़क लाजवाब।

(महमूदका लाठीसे बोतल खोलना और डाकू का लाठी जमीन पर पटकना)

मसऊद—अरे लाठी क्यों पटकता है; क्या खटमल मारता है?

(महमूदका शराबनोशी करना; डाकूका ललच कर पूछना)

सरदार—क्यों जनाब, इसका मजा कैसा है ?

मसऊद—लीजिये, आइये। (अलग होकर) बुड्ढे के मुंह में भी पानी भर आया।

महमूद—यह वह माशूक कमसिन है; जिसकी तारीफो तौसीफ गैरमुमकिन है। जवान को लड़का बनाती है: बुड्ढों को जवानी का मजा चखाती है:-

लिया जब हाथ में सागर शराबे अरगवानी का।
तो बूढ़ों को मजा आने लगा फस्ले जवानी का॥

सरदार-जब तो जरा मुझे भी दीजिये। जो यों तासीरखेज है।

(महमूद से शराब लेकर पीना)

तौबा ! तौबा ! इसकी बू कैसी तेज है। (मुँह बिगाड़ना।)

मसऊद-कमबख्त ने जैसे कभी पी ही नहीं ?

सरदार—तौबा ! तौबा ! तौबा !

मसऊद—हत्तेरी ! तौबा ! तौबा ! तौबा !

सरदार-क्यों मियां मसऊद, तुम क्यों खामोश हो; एक जाम तुम भी पी लो।

मसऊद—अजी जनाब, यह कालापानी तो मेरे मजहब में हराम है।

सरदार-जयां करती नहीं, कुछ शराब थोड़ी सी:
बहुत नहीं, अजी लीजिये जनाब थोड़ी सी।

महमूद-बशर का जीस्त है मिस्ले हबाब थोड़ी सी;
मज़ा इसी में है पीले शराब थोड़ी सी।

मसऊद-मज़ा दिखाती है पहले शराब थोड़ी सी;
बहुत ये करती है आखिर ख़राब थोड़ी सी।

महमूद-(मसऊद से) अबे; यह ले, पी ले। खौफ क्या दिल से मेरा जाता रहा ?

मसऊद—दुत, रुतबा सब आपका जाता रहा।*

महमूद-(मसऊद के करीब आकर) ले, तुझे पीना होगा।

(मसऊद का महमूद को तमांचा मारना; महमूद का डरकर अलग होना)

मसऊद—चल, झूठा कहीं का ?

सरदार—आप बैठ जांय, मैं इसे पिलाता हूं। देखें, कैसे नहीं पीता। (शराब लेकर) अबे, यह ले, गुलाब पी ले।

मसऊद—(महमूद की तरफ) ले; यह जुलाब पी ले। काहे को गुलाब पी ले। क्या तेरे बापका नौकर हूं ?

सरदार—अबे, हम तेरी जान के मालिक हैं।

मसऊद—चल झूठा कहीं का; क्या बकता है।

सरदार—क्यों, तू नहीं पीयेगा ?

मसऊद—कभी नहीं; हरगिज नहीं।

(डाकू का खंजर निकाल कर मसऊद को दिखाना)

सरदार—क्यों, अब भी नहीं पीयेगा ?

मसऊद—(अलग होकर) यह तो मैं पहिले ही कहता था कि, दसवें नम्बर का बदमाश है। लेकिन शराब तो कभी नहीं पीऊंगा। (डाकू से) अहा, क्या आप सच्च समझे थे कि मैं न पीऊंगाः—

लाइये, पीने से कब इसके मुझे इनकार है;
आप भी हैं हमको कोई पारसा समझे हुए।

महमूद—पीयेगा; पीयेगा।

(मसऊद का शराब लेकर आड़ में जाना)

सरदार—अबे, वहां क्यों जाता है।

मसऊद—मैं रोक से पीता हूँ; रोक से।

सरदार—अच्छा, पी ले।

(मसऊद का शराब लेकर अलग फेंक देना और झूठा नशा जाहिर करना)

मसऊद—फिकरे पै मौज दामने, दरिया कतर गई;
किश्तये बादबां मुझपर याक तर गई।

ओहो! ओहो! रेलगाड़ी पर कबरिस्तान होकर भागा। लेना, दौड़ना, पकड़ना, तू तू तू (उछलना गिरना)

सरदार—लीजिये, वह तायफा भी आ गयी।

मसऊद—क्या तायफा आ गयी?

(आना तवायफका)

महमूद—हां हां, गाओ गाओ, कोई दिल लुभाने का नाच दिखाओ।

गाना।

तवायफ-जग ठग मग पर तक तक पग धर।
जाल फांसे पर धर ध्यान, चोर डाकू सरपर जान॥ जग०-
मुल का काम, जुलका दाम फँसे खबरे कर।
रहबर मेतहर दुश्मन बदज़न खुद सर मान। ज़ग०—
साकी शराब आबे मये नाब डाल जाम।
भरके जाम, ज़रका काम, कर तमाम, शर मुदाम॥ जग०-

मसऊद—क्यों री माई! तू यहां नाचने गाने आई है, तो खंज़र क्यों साथ लाई है?

तवायफ—थोड़ी देर में हम इनका करतब दिखायेंगे, तो ईनाम पायेंगे।

मसऊद—(खुदसे) जब तो जरूर हलाल किये जायेंगे।

कोई बहाना करके सटक जाना चाहिये। और जाते जाते सराय को आग लगाना चाहिये। (डाकूसे) जनाब, मुझे प्यास लगी है।

सरदार—वह सामने मटका धरा है। जा पानी पीले।

(मसऊद का जाना)

(तवायफों का नाचना—नाच खतम होने पर एक ब एक अन्दर से ग़ुल होना।)

आग लगी! आग लगी! आग लगी!

(सबका घबराकर भागना; परदे का उठना; सराय का जलते हुए नज़र आना; सरकारी बंबेका आकर आग बुझाना)

ड्राप सीन।

—:o:—

अंक दूसरा। सीन पहिला।

महल सजा हुआ।

(शीरीं का याद कासिम में बैठे हुए नज़र आना; सहेलियों का नाचते हुए आना)

गाना।

रंगीलो आओ आओ नये रंग ढंग लाओ।
आओ जाओ लुभाओ लुभाओ।
प्यारी खुश हाली, निराली मचाओ॥ रंगीलो०—
मुरादें पायें, खुशियां मनायें, आप ये सदा।
सुख ओ शादी चाह ग़म भूल जायें,
रैन रहें दिलदार जेबाई रेनाई एकताई।
बेदार हो शहा ऐश पाओ॥ रंगीलो०—

गाना।

शीरीं—हाय रे फिराक में यह जाय रे हमारी जान
हाय हाय क्या करूं।
गोइयां, देखत नहीं सइयां,
तरसइयां रुलइयां जिया हो जलइयां।
हायरे प्यारी जानसे वारी सारी ये जइयां
प्यारी मानोरी लेव हम तोरी पइयां पड़ें।
तोरी गोरी पइयां०—
नहीं नहीं, निस दिन कलियां तन मन जलियां।
सलोमा—कर भलियाँ रंग रेलियां छल बलियां हरदम

प्यारी बेगम साहिबा! दुश्मनों का क्या हाल है; इस क़द्र क्यों रंजो मलाल है:—

आरिज़ जो फूल से थे, वे कुम्हलाये जाते हैं।
आसार हमें नेक नहीं पाये जाते हैं॥

शीरीं—(खुदसे) हाय! इस मर्ज का छिपाना भी नहीं बेहतर। मगर बयान भी करूं तो क्योंकर:—

इलाजे दर्ददिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता।
तुम अच्छा कर नहीं सकते, मैं अच्छा हो नहीं सकता

सलोमा—प्यारी! आखिर वह कौन है, उसका कुछ नामो निशान नहीं।

शीरीं—जबां से जब कभी उस बेवफा का नाम लेती हूं;
तो पहिले दोनों हाथोंसे कलेजा थाम लेती हूँ।

कुछ दिन हुए कि बुगदाद का एक सौदागर आया था

स गिरां नुमायां हमराह लाया था। उसके इश्क़ में बेक-
ी है; हर वक़्त आहो जारी है:-

हिज्र में अपने मुझे वे बेकरारी दे गये;
ले गये आरामो राहत अश्कबारी दे गये।

चमन—लो बुआ; मैं तो समझ गई; वह जो मुल्के हुस्न का
किम है; शायद उसका नाम कासिम है।

शीरीं—हाय, कासिम! कासिम! अब मैं तुझे किस तरह
ऊंगी या योंही आतशे हिजरां में जली जाऊँगी:-

चश्म पुर आब हैं, और उसपै ज़िगर जलता है;
क्या कयामत है कि, बरसात में घर जलता है।

गाना।

ीरीं—दिलजानी मेरी, मेरी तूने कदर भी न जानी॥ दिल०
ब आओ सइयां, न सताओ सइयां, न जलाओ सइयां।
दिलजानी दिलबर जानी मेरी०—
। चमन से गुजरे तो ऐ सबा, तू यह कहना बुलबुले ज़ारसे।
खिजां के दिन भी हैं सामने, न लगाना दिलको बहारसे॥
दिल जानी०—

ीरींका अन्दर जाना; मसऊदका आकर दरवाजे पर पुकारना)

मसऊद—खोलो, दरवाजा खोलो?

सलोमा—अरे, तुम कौन हो; जरा मुँह से तो बोलो?

मसऊद—अजी मैं शर्त से गुज़रने आयां हुं; शीरीं से शादी
ने आया हूँ।

सलोमा—यह कोई बड़ा अमीरजादा है।

(दरवाजा खोलना)

तुम कौन हो?

मसऊद—मैं मुल्के हब्श का शहजादा हूं; शीरीं का दिल दादा हूँ। मंगवाओ, मंगवाओ, वह संदूक मंगवाओ; देर लगाओ।

गाना।

है वह बक्स कहां मंगवाना यहां, करो शर्त यहां।
करो जल्द अयां, नहीं रखो नेहां, मेरी जाती है जां।
मैं हूँ बाँका जवान, बड़ा आलीशान, मेहमान हूँ।
करो मान, चलो शादी करो अब देर है क्या।
मैं राजी बादिल मेरा राज़ी, खुदा कहो
काज़ी को यहां लाओ बुला॥ है०—

सलीमा—बेशक बेशक; चेहरेकी स्याही, देती है गवाह सज़ावार सिपाहीः—

कसरत से है गुनाह के स्याह रंग;
दुनिया में इसलिये है बदोंका स्याह रंग।

मसऊद—वाह रे तुम्हारा बातों में उड़ाना; स्याह रं में कौनसा ऐब जाना। दांतों में आब, जैसे गौहरे नायाब कैसो बिजली की ताब, है स्याही लाजबाब। सदके मेरी जान है, खालिक की शान है, परियों की हिज़ में होठोंप जान है। देखो सुरमा गो काला है, मगर औरों को रोशनी दें वाला है। गो हमारी रंगत स्याह है, मगर आन बान शा अमीराना आलीज़ाह हैः—

कहदो यह खबर जाननेवालों के सामने;
चलता नहीं चिराग है कालों के सामने।

सलीमा—वह भी एक मूज़ी है और डसने वाला है। ायद अजाब के लिये रंग उसका काला है।

मसऊद—क्या जो काले हैं वह अजाब में मुबतिला होने ाले हैं? नहीं, नहीं, काले ही तो निराले हैं; सब के सिरों की ान पाने वाले हैं। क्योंकि सर के बाल काले हैं।

सलीमा—तो क्या वह नहीं सुफेद होने वाले हैं?

मसऊद—हां, जब तक सरके बाल काले हैं; नौजवान मत- ाले हैं। जब सुफेद हुए तो गोर के हवाले हैं। देखो आसमान ा रंग आसोद है; मगर सब पर साया किए हुए है। इसलिये तबे में जबर है।

सलीमा—अहा! तो शायद तुम कोई आसमान के कड़े हो?

मसऊद—बेशक, अब तो आपको भी मेरी कदर करनी चाहिये। चलिये, मंगाइये, मंगाइये, वह सन्दूक लाइये।

सलीमा—जरा विलायती साबुन से मुंह धो आइये!

मसऊद—क्यों क्यों, ऐ हूर पैकर, हम गुलफामज़ादों से यह कलाम बरतर?

सलीमा—चल चल, ओ जुलमात के जानवर, बोहते हजूर के बन्दर, गारिये के पत्थर।

मसऊद—तू औरत है तुझे दूंगा जवाब खंजर से।
वर्ना देता गला तेरा दाब खंजरसे॥

सलीमा—क्या बुज़दिलों को पड़ता है काम खंजर से।
दिखाई देते हैं हमको तो आप बन्दर से॥

मसऊद—बस, अब ज्यादा तुम मेरी शान में बेअदबी न दिखाओ; जल्द वह सन्दूक मंगवाओ।

सलीमा—पहिले अपना हस्बो नसब तो बतलाओ।

मसऊद—तुम्हें कैसे होगा यकीने दिलपज़ीर, कि मैं हूँ कहीं का अमीरो कबीर।

सलीमा—यह तो कुछ मुश्किल नहीं। बातें रहने दीजिये: अपना शज़रा पेश कीजिये।

मसऊद—शज़रा, अब कहाँ से लाऊँ ? शज़रा तो चूहों ने काटा, दीमक ने चाटा, वह गलके हो गया आंटा।

सलीमा—चल बे ओ गुलाम! बदलग़ाम, क्या हम नहीं जानते कि है हब्शी फाम?

मसऊद—(क़हक़हा मारकर) अरे, तू क्या सचमुच समझती थी कि मैं कहीं का अमीरो वजीर हूँ। मैं तो तुम्हें सताता था, आज़माता था। मैं नौकरी के उम्मीद पर आया हूँ।

सलीमा—वाह शाबाश! बादशाह से वज़ीर, वज़ीर से अमीर, आखिर को नौकरी की तदबीर। चल निकल, हमें नौकर की कोई जरूरत नहीं।

मसऊद—तुम्हें नहीं जरूरत है, पर मुझे तो जरूरत है।

सलीमा—क्या कुछ जबरदस्ती है?

मसऊद—हां; हमारी तो यह मर्जी है। बल्कि मेरी नज़र में कुछ और ही फबती है?

सलीमा—वाह! क्या बड़ी खबसी है।

गाना।

मसऊद—रंगत चमकत कुदरत गुजरत।
दरशन बरसन निरखत अँखियां।
रङ्ग काला, ढङ्ग आला,
रात काली, जुल्फ काली।
है निराली तू मेरी जान।

सलीमा—जा रे रिजाले, तू कव्वे से काले,
काले हब्शी गुलाम।
मसऊद—काले को पाऊँ तो शादी रचाऊँ न खोलो जबान।
सलीमा—जारे जारे ओ आवारे, एँड़ी चोटी पर
वारूं जां॥ रंगत चमकत०—

दूर निगोड़े, चल निकल यहांसे, मैं तुझसे बेजार हूँ।

मसऊद–अजी, मैं तो पहिले ही से तुम्हारा आशिकेजार हूं।

सलीमा—अरे तू तो बहुत बहका जाता है। तूने मुझे कब देखा, जो आशिक हो गया।

मसऊद—जिस वक्त मेरा आक़ा कासिम यहां आया था। मैंने तुझे देखा था (शीरीं का आकर सुनना)

शीरीं—अहा कासिम! कासिम! तूने अभी जिसका नाम लिया यह कौन कासिम?

मसऊद—(अलग होकर) अरे, यह कोई और गुल खिला? अब मेरे मज़े हैं। (शीरीं से) क्या फरमाया हुज़ूर?

शीरीं–अभी जिस्का नाम लिया, यह कौन कासिम है?

मसऊद—तो इससे आपको क्या? बन्दा उसका नौकर है; वह बगदाद का सौदागर है।

शीरीं–तो अब वह कहां है?

मसऊद—मैं जानता हूँ, वह जहां है।

शीरीं—कुछ हमें भी पता दे?

मसऊद—किसको गरज जो बता दे। क्या मैं तुम्हारा नौकर हूं?

शीरीं–अगर तू हमारा नौकर होगा तो बतावेगा?

मसऊद—जब बनूंगा तब देखा जायगा।

शीरीं—तू हमारा नौकर प्यारा है।

(गाना)

मसऊद—तुम्हें दूंगा मैं वाकी खबरियाँ जान।
मुझे दे दो यह प्यारी सुंदरिया जान ॥

(सलीमा को बताकर)

प्यारी चंचल है न्यारी न्यारी छलबल।
सलीमा—अरे जारे मुए चल चल, मैं गुलाम का काम लूं ॥
तुम्हें दूंगा०—
मसऊद—अक्सर काम करूंगा; खुश अन्जाम करूंगा।
सलीमा—बस कुछ काम नहीं जा, चल चल चोर कहीं का।
शीरीं—जाओ नादां कहीं; कर बदनाम नहीं तू।
मसऊद—है नौकर बरतर अफसर तुझ पर।
सलीमा—बरतर अख़्तर हमपर अफसर ॥ तुम्हें दूंगा०-

मसऊद-(सलीमा से) क्यों; अब तो वस्ल गंवारा है?

सलीमा—बीबी; यह फिकरा सारा है।

शीरीं—चुप; तू बड़ी आवारा है।

मसऊद—यह तहरीरका इशारा है। अच्छा जी। होने दो होने दो।

शीरीं—अब तू सामान सफर कर और जल्द खुश खबरी सुना बगदाद से आनकर।

मसऊद—हुजूर; खुशखबरी क्या सुनाऊं. साथ ही कासिम को लाऊं और सच्चा आशिक आपका दिखाऊं।

सलीमा—मुआ, कितना मुँहजोर हो गया है। सच है. कमीनों को मुँह न लगाना चाहिये; पाँव की जूती पैरों से ही दबानी चाहिये। (शीरीं का जाना)

गाना।

मसऊद–गोरी तोरा दूल्हा बनूं मैं साँवरिया।
ऐसी गोरी गोरी नारी का मैं काला काला बनूँ पिया।
सलीमा–ऐसे मैं निसारूं वारूं हज़ारों पिया।
दिया न बुझाओ जलाओ न जाओ जिया।
मसऊद–लचक मचक तोरी कमर सुँदरिया,
दिलबर अनवर दूल्हा बनूँ खुश्तर।
सलीमा–जायगा तू आने यहाँ न पायगा।
मसऊद–तो मैं मर जाऊंगा न घर अब जाऊँगा।
(गाते गाते चले जाना)

अंक दूसरा। सीन दूसरा।

महल अगला।

(तिलहा का अन्दर से गाते हुए दाखिल होना)

गाना।

मोहें बिरहा सतावे जी जलावे मोरे सँइयां,
मैं लागूँ तोरी पइयां जो आवे मोरे धाम॥ मोहें०–
इन्तज़ारी में गुजारी रात सारी बेकरारी।
हाय मैं वारी, राम, प्यारा तू, प्यारा हमारा;
दुबारा नज़ारा दिखा दे मोरे शाम।
हाय! हाय! हाय! हाय! हाय!
सहल समझे थे बहुत हम तो लगाना दिलका।
सख्त मुश्किल हुआ अब आप में आना दिलका॥

हाय ! हाय ! हाय ! ! ! मोहें०—

मुसद्दस।

पहलू में जब मेरे वह मेरा दिल नशीं नहीं।
होती है जाने ज़ार को तसकीं कहीं नहीं॥
राहत शबे फिराक़ में जिसके नहीं नहीं।
क्या मेहर इसमें मेरे लिये दिल हज़ीं नहीं॥
यारा है हिज्र मुझमें न ताबे फिराक़ है।
गर है तो इसका ही फ़क़ इश्तियाक़ है॥

शायलाक—(आकर) अरे ओ आवारा नाकारा, तूने एक अदने मुसल्मान से बेसरोसामान दिल लगाकर हमारी कौम को धब्बा लगाया; मेरा जाहो मरतबा खाक़ में मिलाया।

तिलहा—ऐ वालिद मेहरबान ! उसे न कहो बे सरोसामान, वह मेरा चाहने वाला है; हुस्न की दौलत से निराला है।

शायलाक—मुहासिन का हुस्न क्या तुझे प्यारा नज़र पड़ा।
क्या आसमाने हुस्न का तारा नज़र पड़ा॥

तिलहा—तारा न कहो माह मुनव्वर नज़र आया;
खूबी में महो मेहर से बेहतर नज़र आया।
बाग़े जहां में मुझको गुलेतर नज़र आया;
मूसा को कोहे तूर जो नूरे नज़र आया॥

शायलाक—क्या ऐसी दोस्ती में कुछ मुहब्बत भी होती है ?

तिलहा—क्या मुहब्बत अदावत में होती है ?

शायलाक—एक ग़ैर से यों दिलका लगाना नहीं अच्छा।

तिलहा—दो दिल जो मिले उनका छुड़ाना नहीं अच्छा॥

शायलाक—तुमको होगी अपनी उल्फत के तसलसुल से गरज।
पर हमें है अपने मज़हब के तजम्मुल से गरज॥

अरे ओ नादान, पशेमान, तू तो है अन्ज़ान, मुसल्मान तो होते हैं बड़े सख्त दिल इन्सान।

तिलहा—सुनिये वालिद मैं, कहे देती हूँ इस दम साफ साफ;
एक जुमला भी न कहियेगा मुसलमां के खिलाफ़।
गर मुखालिफ इसके मैं पाऊं ज़रा भी आपको;
आपने बेटी को छोड़ा और मैंने बापको॥

शायलाक—अच्छा अच्छा, मैं तेरा इलाज़ करता हूँ; कैद-खाने में मुहताज करता हूँ।

तिलहा—जो कुछ आप फरमावें मंजूर बसरोचश्म है; मगर जब दिल में नूरो सुरूर है, तो किसीका क्या मकदूर है।

शायलाक—अच्छा अच्छा, ज्यादा बक बक करके न मचलः—

मिटादी आबरू मेरी तेरा कैसा चलन बिगड़ा॥
सुखुन पहिले तो बिगड़े थे मगर अब तो दहन बिगड़ा।

(जाना शायलाक का।)

तिलहा—सख्तियाँ झेलूंगी, जान पर खेलूंगी; मगर मुहसिन को तार मोहब्बत को न तोड़ूंगी; कशिशे बर्क का असर न छोड़ूंगी :—

भला कब रह सक्ते हैं, आपमें बारफ्तये उल्फत।
कहीं आया हुआ दिल भी संभाले से सँभलता है॥

अंक दूसरा। सीन तीसरा।

शीरीं का सजा हुआ महल।

मसऊद—सुभानअल्लाह! क्या सजा सजाया मकान है; तमाम ऐशो निशात का मोहइया सामान है। मगर बन्दे को तो बुगदाद जाने का फरमान है। अच्छा, यह भी सही; क्योंकि प्यारी सलीमा से शादी का अरमान है। (सलीमा का आना)

सलीमा—क्यों रे ओ कलमूँहे, यह तूने क्या आफत मचाई?

मसऊद-हां हां, क्या आफत मचा रखी है?

सलीमा—भला, कल बेगम से तूने क्या कहा था?

मसऊद—मैंने तो बेगम से इतना ही कहा था कि, सलीमा मुझे अकेला पाती है, तो बहुत कुछ सताती है। यानी खफा न हो मेरी जान; अब शादी का करो सामान।

सलीमा-मुझसे शादीका अब पयाम हुआ।
मेंडकी को भी लो जुकाम हुआ॥

गाना।

मसऊद-गोरी कैसा हूँ प्यारा प्यारा संवरिया रे,
भौंरी कारी फूलों में प्यारे प्यारे हैं।
मतवारे न्यारे कारे नैन॥ गोरी०—
कालेमें डराने को बिष उगे हर बार।
ऐसों से डरना सदा, है डसने को तय्यार॥
काली है रैन प्यारी, है नैन प्यारी,
काले हैं नहीं प्यारे काले काले गेसू सुन्दरियारे॥ गो०

सलीमा—दूर मूये निगोड़े, मुझे माफ कर; मैं तेरी बातों से परेशान होती हूँ। क्यों इतनी ज़बानदराज़ी करता है?

मसऊद—परेशान किस लिये होती हैं ? मैं तुमसे पयामे शादी करता हूँ।

सलीमा—तू यों न मानेगा ? ठैर; ठैर, मैं अभी ठीक किये देती हूँ।

(सलीमा का मसऊद को जूतियों से मारना; छिपकर चमन का देखना।)

सलीमा—ले मूये ले, शादी का मजा ! (मारना)

मसऊद—बस बस, प्यारी ! कहीं जूतियाँ न टूट जायँ तुम्हारी। (मार खाकर) वाहरे मेरे दिलदार, कैसी की फूलों की बौछार।

सलीमा—मुआ मार खाता है और उसे फूलोंकी बौछार बताता ह। (चमनका जाहिर होना)

चमन—वाहरी छोटी, तेरे इश्क की बू फूटी।

सलीमा—यारों से बात करे इशारों में फँस गई।

चमन—क्या तूने सोचा समझा, कैसे रास्ता चलते अँटकी।

सलीमा—ऊँचा नीचा कैसे देखा नाले पर नाले कैसे भटकी।

चमन—कहके बात मुकरने वाली, तौबा तिल्ला करने वाली, घरका पानी भरने वाली।

सलीमा—कैसी हँसती भोली भाली; छिपकर आँख लड़ाने वाली; मुशटन्डो पर मरने वाली।

चमन—वाहरी बीबी गम्माज !

सलीमा—बाज न आयेगी गलादराज।

(दोनों का लड़ना; मसऊद का बीच बचाव करना; दोनोंका मसऊद को मारना)

मसऊद—देखो देखो, घोड़े घोड़े लड़ें और मोची की

अंक दूसरा। सीन तीसरा।

शीरीं का सजा हुआ महल।

मसऊद—सुभानअल्लाह! क्या सजा सजाया मकान है; तमाम ऐशो निशात का मोहइया सामान है। मगर बन्दे को तो बुगदाद जाने का फरमान है। अच्छा, यह भी सही; क्योंकि प्यारी सलीमा से शादी का अरमान है। (सलीमा का आना)

सलीमा—क्यों रे ओ कलमूँहे, यह तूने क्या आफत मचाई?

मसऊद-हां हां, क्या आफत मचा रखी है?

सलीमा—भला, कल बेगम से तूने क्या कहा था?

मसऊद—मैंने तो बेगम से इतना ही कहा था कि, सलीमा मुझे अकेला पाती है, तो बहुत कुछ सताती है। यानी खफा न हो मेरी जान; अब शादी का करो सामान।

सलीमा-मुझसे शादीका अब पयाम हुआ।
मेंडकी को भी लो जुकाम हुआ॥

गाना।

मसऊद-गोरी कैसा हूँ प्यारा प्यारा संवरिया रे,
भौंरी कारी फूलों में प्यारे प्यारे हैं।
मतवारे न्यारे कारे नैन॥ गोरी०—
कालेमें डराने को बिष उगे हर बार।
ऐसों से डरना सदा, है डसने को तय्यार॥
काली है रैन प्यारी, है नैन प्यारी,
काले हैं नहीं प्यारे काले काले गेसू सुन्दरियारे॥ गो०

सलीमा—दूर मूये निगोड़े, मुझे माफ कर; मैं तेरी बातों से परेशान होती हूँ। क्यों इतनी ज़बानदराज़ी करता है?

मसऊद—परेशान किस लिये होती हैं ? मैं तुमसे पयामे शादी करता हूँ।

सलीमा—तू यों न मानेगा ? ठैर; ठैर, मैं अभी ठीक किये देती हूँ।

(सलीमा का मसऊद को जूतियों से मारना; छिपकर चमन का देखना।)

सलीमा—ले मूये ले, शादी का मजा ! (मारना)

मसऊद—बस बस, प्यारी ! कहीं जूतियाँ न टूट जायँ तुम्हारी। (मार खाकर) वाहरे मेरे दिलदार, कैसी की फूलों की बौछार।

सलीमा—मुआ मार खाता है और उसे फूलोंकी बौछार बताता ह। (चमनका जाहिर होना)

चमन—वाहरी छोटी, तेरे इश्क की बू फूटी।

सलीमा—यारों से बात करे इशारों में फँस गई।

चमन—क्या तूने सोचा समझा, कैसे रास्ता चलते अँटकी।

सलीमा—ऊँचा नीचा कैसे देखा नाले पर नाले कैसे भटकी।

चमन—कहके बात मुकरने वाली, तौबा तिल्ला करने वाली, घरका पानी भरने वाली।

सलीमा—कैसी हँसती भोली भाली: छिपकर आँख लड़ाने वाली; मुशटन्डो पर मरने वाली।

चमन—वाहरी बीबी गम्माज !

सलीमा—बाज न आयेगी गलादराज।

(दोनों का लड़ना; मसऊद का बीच बचाव करना; दोनोंका मसऊद को मारना)

मसऊद—देखो देखो, घोड़े घोड़े लड़ें और मोची की

जीन टूटे। (दोनों से) चुप रहो, ओ दिवानी मस्तानियों! दोनों मुझपर मरने वाली। तू भी मुझपर मरनेवाली, तूभी मुझपर मरने वाली।

चमन—मूये कलूटा, तू क्यों बोलता है?

सलीमा—बेहूदा, तू जबान खोलता है।

(दोनों का मसऊद को मारकर गिराना और ऊपर चढ़ जाना)

शीरीं—(आकर) छोड़ो छोड़ो! इसको छोड़ो; इसपर कहर न तोड़ो। (मसऊद को छुड़ाना।)

मसऊद—छोड़ा तो क्या छोड़ा? कमर को तोड़ा, पीठ को कर दिया पक्का फोड़ा।

शीरीं—अच्छा हुआ, तेरी बदज़ुबानी की यही सजा है।

मसऊद—बानूं साहेबा! आप क्या जाने, इन्हीं बातों में तो मजा है। (अन्दर से महमूद का पुकारना।)

महमूद—कोई इस घर में है, जरा दरवाजे पर आओ?

सलीमा—तुम कौन हो, अपना नामो निशां बताओ?

महमूद—अजी, हम वसीयते इश्तेहार सुनकर आये हैं?

शीरीं—किसको शर्त वसीयत ने उभाड़ा है; बेहूदा कोशिश ने पुकारा है।

(शीरीं का सलीमा को इशारा करना कि दरवाज़ा खोले; सलीमाका दरवाजे पर जाना; महमूद का आना)

महमूद—अस्सलामअलेकुम! (जवाब न पानेपर, दूसरी तरफ फिरकर) वलेकुमस्सलाम!

मसऊद—अरे ओ शराबी! सूरत हराम! क्या डाकुओं ने तुझे योंही छोड़ दिया; न तमाम किया?

महमूद—कौन है, मसऊद?

मसऊद—हाँ बे मरदूद।

महमूद—अबे, तू यहां है?

मसऊद—अबे, तू यहां कहां ?

महमूद—क्यों बे, तू मक्कारी न छोड़ेगा ?

मसऊद—क्यों बे, तू शराबख़्वारी न छोड़ेगा ?

सलीमा—(महमूद से) अज़ी, आप शरीफ़ होकर क़मीनेपन की बातें कर रहे हैं ?

मसऊद—शरीफ़, अजी यह बड़े ज़ातेशरीफ़ हैं !

महमूद—अच्छा, तो लाइये; वह संदूक दिखलाइये।

सलीमा—पहले अपना हसबो नसब् तो बतलाइये ?

महमूद—मैं बुग़दाद का रहने वाला हूँ; सौदागरी मेरा पेशा है, शराफ़त मेरे चेहरे से हवेदा है।

मसऊद—(शीरीं से) हुजूर ने इसे पहचाना ? यह कासिम का है बड़ा भाई। नासजाये कम्बख़्त ने भाई की कुल दौलत शराबख़्वारी में उड़ाई। अब जो शर्त वसीयत सुन पाई; तो यहाँ दौड़े आये मियाँ सौदाई कस्साई।

महमूद—चुप बेहूदा, क्या तेरी शामत आई है ? (सलीमा से) बस,अब वह संन्दूक मँगवाइये; देर न लगाइये।

सलीमा—सुनिये साहब, संदूक मंगवाने से पेश्तर एक और शर्त है।

महमूद—बयान कीजिये, वह राज़ काबिले गौर है।

सलीमा—आप अगर सन्दूक के इन्तख़ाब में नाकामयाबी पायेंगे और इस राज़ को जबां पर लायेंगे तो मुअक्कलाते तिलस्मात आपका गला दबायेंगे।

महमूद—मुझे आपकी हर शर्त मंजूर है।

शीरीं—क्यों मसऊद, अगर इसने असली सन्दूक पसन्द किया ?

मसऊद—मैं ने तो अभी इस्का नाका बन्द किया। यह मियां मल्लू तो हो जायेंगे एक चिल्लू में उल्लू।

सलीमा—लीजिये, होशियार हो जाइए। ऐ मुश्रक्कलां तिलस्मात, दिखाओ अपनी करामात।

(जमीन पर पाँव मारना; महल का गायब होना; डरावनी-शक्लों का निकलना; तीन सन्दूकों का नमूदार होना)

महमूद—हां बताओ, जल्द बताओ, तसवीर किस संदूक में है?

सलीमा—यह हम क्योंकर बता सक्ती हैं। यह तो आपही को बताना होगा और संदूक छांटना होगा।

महमूद—लो मैंने यह सन्दूक छांटा।

सलीमा—अच्छा छांटा।

महमूद—और शादी भी हुई।

मसऊद—साथ ही बरबादी भी हुई।

महमूद—फिर तो कल मकान, खजाना, गाड़ी-घोड़ा, हाथी गदहा...............

मसऊद—(बात काटकर) खच्चर-मच्चर, कुत्ता-बिल्ला घूंसी बिल्ली, मुर्ग बत्तख—

महमूद—(बात काटकर) वगैरह वगैरह का मालिक बन जाऊँगा; फिर खूब मजे उड़ाऊँगा और जहाज भर भरके शराब मँगाऊँगा।

मसऊद—इसकी जरूरत क्या है। आपके वास्ते मैं यहीं बैठा बैठा बनाऊँगा और उसमें आपको खड़े खड़े छलकाऊँगा।

महमूद—तुझको मैं खड़े खड़े निकलवाऊँगा।

मसऊद—अबे, मैं तो इस घर का मुख्तार हूं; मैं तुझे निकलवा दूंगा।

महमूद—बस बस, अब मैं तुझे रहने नहीं देता। चल, चल निकल।

मसऊद—चल चल, झूठा कहीं का? पहिले तू सन्दूक

तो छांट।

महमूद—देख मैंने छांटा।

मसऊद—मगर यह लीजिये, शराब तो नोश कीजिये!

(महमूद को शराब देना)

महमूद-क्या शराब?

मसऊद—जी हां, जनाब?

महमूद—और अब आदाब। (महमूद का शराब पीना)

मसऊद—लो, अब यह दीवाना हुआ पूरा; इस शराब में मिला है धतूरा।

महमूद-मुझे इस वक्त कुछ अन्धेरा सा मालूम होता है।

मसऊद—तो एकशा नम्बरों की ऐनक लगाओ?

महमूद—(सोने के संदूक को छूकर) इसमें तसबीर है? नहीं, नहीं; (चांदी के संदूक को छूकर) इसमें तसबीर है। (लोहे के) बस बस, इसमें तसबीर है। यह लोहेका संदूक है और इस पर इबारत लिखी है कि, जो मुझे पसंद करेगा, वह खुदको खतरे में डालेगा। भला कौन ऐसा बेवकूफ है जो खुदको खतरे में डालेगा। यह चांदी का संदूक है, और इसपर लिखा है कि, जो शख्स इसको पसंद करेगा; वह ऐसी चीज़ पायेगा, जिसके वह लायक है। बस, मैं इसके लायक हूं कि, प्यारी शीरीं को पाऊँ। (सोने के संदूक को देखकर) इसपर यह तहरीर है कि, इसको जो शख्स पसंद करेगा, वह उसको पायेगा जिसके कि, सब शायक हैं। वह तो प्यारी शीरीं है, जिसके सब शायक हैं। बस तसबीर इसीमें है, इसको खोलिये?

सलीमा—यह अख्तियार आपको है। जिसको पसंद कीजिये; उसकी कुंजी लीजिये।

महमूद—सोने के संदूक की कुंजी दीजिये?

सलीमा—यह लीजिये।

(सलीमा का कुंजी देना; सन्दूक खोलना। उसमें इन्सान की खोपड़ी निकलना, सब का हैरान होना, परदे का गिरना; महमूद का वही खोपड़ी लेकर बाजार में जाना)

अंक दूसरा। सीन चौथा।

रास्ता।

महमूद—हाय, मेरी किस्मत का यही लिखा था! यह किसी इन्सान की खोपड़ी है। (खोपड़ी की आँख के गड़हे में से कागज़ निकाल कर) यह सुनहरे हर्फों में लिखा है:—

चमकने वाली जो हैं आशिया;
नहीं उसमेंसे सब होती हैं सोना।
चमक जो ज़ाहरी मुझमें है पैदा;
इसी पर लोग हो जाते हैं शैदा॥

हाय, शराब! तेरा खाना खराब। ऐ बाइसे तंग खान्दानी, तेरे सबब कैसी उठाई ज़िल्लत पशेमानी:—

शराबी का आखिर नतीजा है बद;
न हो नेक उकबा से दुनिया है बद।
तरीके हवस मालोज़र का है बद;
किया मैंने दोनों का शेवा है बद।
हुआ मुझ से आमाल क्या क्या है बद॥

हैफ! सद हैफ! मैं अपने छोटे भाई की कुल दौलत अपने तसर्रुफ में लाया; जिसका नतीजा यह पाया। अब मेरे आमाल मुझे जहन्नुम का रास्ता दिखा रहे हैं:—

कोई नफ़रत से भी मुझ पर न नज़र करता है।
अब तो नाम से मेरे जहन्नुम भी उजर करता है॥

बस, इस नहिस शराब से इज़तनाब करूं, और तौबा व मुस्तेज़ाब करूं। बाकी उम्र यादे इलाही में सर्फ करूं और खुदा से अपनी नज़ात की दुआ मांगूं:—

हक़ से माफ़ी चाहूंगा अपने गुनाह की।
शायद हो मुस्तेज़ाब दुआ रूसियाह की॥

गाना।

यह दुआ खुदाया मेरी हो मुस्तेजाब;
ख्वार ज़ार मैं तो यारब हो गया।
पायेगा ज़िल्लत पीयेगा जो शराब;
है बेअसर यह पुर हज़र करो इज़तेनाब।
छोड़ो बदकार हो नेकता कहीं;
याद हक़ में रात दिन रहें कहीं।
होगा दो ज़हां में फिर न कुछ अजाब;
हो गर वह खुशगवार है नेक इन्तेख्वाब॥

अंक दूसरा। सीन पांचवां।

महल अगला।

(कासिम व मुहसिन का बैठे हुए दिखाई देना)

कासिम—भाई मुहसिन! दरज़ी अभी तक नहीं आयें। मैंने पहिले ही कहा था कि, यह लोग बड़े वादा खिलाफ होते हैं।

मुहसिन—सच तो यह है कि सुनार, दरज़ी और मोची को लोग वादा खिलाफ कहते हैं; मगर मियां, ज्यादातर काम भी उन्हीं से रहते हैं।

कासिम—तो लोग कुछ झूठ तो नहीं कहते हैं। देखो, सुनार के पास जाओ तो कहेगा अभी खटाई में रखे हैं। मोची को कहो; झट जवाब देगा कि, फकत् एँड़ी ही तराशना है। दरज़ी से जब मांगो तो साफ जवाब देगा कि, एक तुक़मा और घुंडिया बाकी हैं।

मुहसिन—लीजिये, वह कारीगर आ गये।

(दरज़ियों का आना; साथही एक बुड्ढे दरज़ी के लिबास में मसऊद का भी आना।)

कासिम—क्यों खलीफा जी! आपने गरम कपड़े तैयार किये? (दूसरे से) और आपने कुरते पायजामे तो सी लिये होंगे?

पहला दरज़ी—हुज़ूर, सब तैयार है; फक्त एक कोट में इश्तरी कर देना है।

कासिम—और आप?

दूसरा दरज़ी—जनाब, कपड़े तो कुल तैयार हैं; मशीन की कल बिगड़ गई थी, इसलिये कुछ बखिया करनी बाकी है।

कासिम—और बड़े मियां, आप तो वह मिसरी लिबास लेते आये होंगे?

तीसरा—हुज़ूर, मैंने तो अभी हाथ ही नहीं लगाया; अब इरादा किया था कि आपने बुलवाया।

कासिम—हां, पिनक में पड़े होंगे। आपने भी चान्डू पी पी कर अपनी जिन्दगी बरबाद कर दी।

तीसरा—हुज़ूर, चुनियां बेगम के जेठ ने वह चिस्का दिया है कि, हमारा दम तो चान्डू ही के दम के साथ है।

कासिम—यह बड़ी वाहियात बात है। कल तो मिस्र का

सफर करूंगा और कपड़े अबतक तैयार नहीं ?

तीसरा—हुजूर, तो मैं गिरता, पड़ता, नशापानी करता, कल तक जरूर लाऊंगा।

कासिम—(दोनो से) और आप ?

दोनो—आज ही शाम तक।

कासिम—अच्छा जाओ, जरूर ले आओ।

(दर्जियों का जाना)

मुहसिन—मेहरबान, आपका तो सामाने सफर दुरुस्त हो गया। बल्कि अपने काम में भी कामयाब हो गये। मगर मेरा काम अबतक कुछ न बना।

कासिम—सच है, अगर इस वक्त मसऊद होता, तो यह काम कुछ मुश्किल न था।

मसऊद—(खुद से) हां, यहां भी मेरे दम का जहूरा है।

गाना।

मुहसिन—क्यों खून बहादे बहाना किसीका,
शबे वस्ल मेंहदी लगाना किसीका।
तमाशाये शाने नजाकत तो देखो,
मेरी आँख में है ठिकाना किसीका !
करेगा खजिल तुझको, ऐ तेग़ क़ातिल,
हथेली में सर रख के लाना किसीका।
गिरी बिजलियां दिल पर गैरों के क्या क्या,
मजा दे गया मुस्कुराना किसीका।
उठे जेर गरदूं भी कितने हजारों,
गजब का है जोबन पर आना किसीका।

ऊदू का गला बज़्म में घोंटना है,
वह जानूं से जानूं दबाना किसीका।
हुआ जेर तजवीज क्या क़त्ल अहसन,
जो मक़तल में है आना जाना किसीका।

गाना।

मसऊद—सांई देना नाम रब के भीख लाओ बाबा,
अरररररर भूका मर गया, लाओ भीख।
पैसा पैसा, कौड़ी कौड़ी देना बाबा॥

अल्लाह के नाम पर दिलवाओ बाबा। फकीर का सवाल है, सवाल कर चला।

कासिम—सांई,यहां कौन सी चीज है;जो तुमसे अजीज है।

मसऊद—बच्चा, हमसे क्या छिपाता है। कल तो तेरा सफर का इरादा है। ले वह तोशे का खाना सांई को खिलवाओ।

कासिम—(मुहसिन से) क्यों भाई, यह शाह साहब तो बड़े पहुँचे हुए मालूम होते हैं।

मसऊद—(खुद से) बड़े पहुंचे हुए हैं ? बड़े पहुंचे हुए हैं।

कासिम-क्यों शाह साहेब, आपको कैसे मालूम हुआ कि, कल हम सफर को जानेवाले हैं।

मसऊद—बाबा,फकीरों से भी कोई बात छिपी रहती है? सब के दिल की बात जाननेवाले हैं।

मुहसिन—अच्छा, बतलाइये तो मेरे दिल में क्या है ?

मसऊद—पे छोकरे, फकीरों का इम्तेहान करता है। तू एक ग़ैर कौम की लड़की पर मरता है।

मुहसिन—आपतो कोई बड़े फकीर मालूम होते हैं।

मसऊद—बच्चा, काहे को; हमतो पेट के कुत्ते हैं।

मुहसिन—ऐ मुर्शिद, करम फरमाइये; कोई तदबीर बतलाइये?

मसऊद—अरे ओ नादान, कहां हैं तेरे औसान; क्या बुरा नहीं है यह काम, जिस्का करते हो ध्यान? किसी की बहू बेटी पर मरना, क्या नहीं है फेल बद करना? ऐ ओ नाआक़बत अन्देश! चाह कन्द रा चाह दरवेश। जो लोग जवानी के जाम में दूसरों से आँख लड़ाते हैं, आखिर वही बात उनपर भी आन पड़ती है। एक दिन उनकी बहू बेटी भी दूसरों से आँख लड़ाती हैं, तब कलई खुल जाती है। जो आज तेरे साथ भागनेको तैयार है, कल औरों के गले का हार होगी।

मुहसिन—ऐ मुर्शिद मेहरबान, आपकी नसीहत मेरे सर-आँखों पर; मगर अब यह बात गैरमुमकिन है। मैं दिल दे चुका हूँ।

मसऊद—इस बातका होना कुछ आसान नहीं है। हां, एक शख्स जिस्का कि मसऊद है नाम, उसी से होने वाला है यह काम। (उंगलियों पर गिन कर) लेकिन वह यहां से बहुत दूर है; इसलिये बन्दा मजबूर है।

कासिम—वह यहां क्योंकर आ सकता है?

मसऊद—फकीर अपनी करामात से बुला सकता है।

मुहसिन—फिर कोई तदबीर बतलाइये, उसे यहां बुलाइये?

मसऊद—अच्छा, पहिले एक सौ रुपये की थैली मुवक्किलों के लिये मँगवाइये।

मुहसिन—सौ रुपया? बन्दा अभी मौजूद करता है।

(जाना मुहसिन का)

मसऊद—(खुद से) तो आपका काम भी मसऊद करता है।

कासिम—साईंजी, आपका दौलतखाना कहां है?

मसऊद—बाबा; फकीरोंके गरीबखानों का क्या ठिकाना है। जहां पर आबो दाना है; वहीं आसन जमाना है।

(मुहसिन का रुपया लाना)

मुहसिन—शाह शाहब, लीजिये ये रुपये हाजिर हैं।

मसऊद—हटाओ हटाओ, फकीरों को रुपयेसे नफरत है।

(पाँवसे अपनी तरफ खींचना)

अच्छा, अब तुम आँखें बन्द कर लो और जो जो मैं कहूं, वह कहते रहो ?

कासिम, मुहसिन—बहुत अच्छा; लो आँखें बन्द की ?

मसऊद-कहो कि या अल्लाह, हम दोनों को अन्धा कर दे।

(दोनों का आँखें खोल देना)

कासिम—वाह शाह साहेब, यह तो हम न कहेंगे।

मुहसिन—शाहजी, ऐसा क्यों कहलवाते हो ?

मसऊद—जाओ जाओ, बड़े कहींके रुपया देने वाले आये। अभी मेरे मुवक्किल खफा हो जायंगे, तो सारा बना बनाया खेल बिगड़ जावेगा। खबरदार, अब जो आंखें खोली तो दोनों को काना बना दूंगा।

कासिम, मुहसिन—अच्छा अब न खोलेंगे।

(दोनोंको फिर आंखें बन्द करना)

मसऊद—कहो कि या अल्लाह हम दोनोंको अन्धा कर दे।

का०, मु०—या अल्लाह, हम दोनों को अन्धा कर दे।

मसऊद—कहो तौबा तिल्ला।

का०, मु०—तौबा तिल्ला।

मसऊद—कहो बागड़ बिल्ला।

का०, मु०—बागड़ बिल्ला।

मसऊद—कहो दालमें पिल्ला।

का०, मु०—दालमें पिल्ला।

मसऊद—कहो मां कुतिया बाप बिल्ला (का० और मु० का चुप रहना) देखो, नहीं कहते हो तो मियां मसऊद आधे रास्ते से वापस चले। देखिये, यह चले। (ठहरकर) अच्छा

कहो कि जनाब, मेहरबान, कदरदान, ज़ीशान, आलीशान, साहबेहिम्मत वजूद मियां मसऊद; आइये, आइये, हम सबपर करम फरमाइये।

का०, मु०—जनाब, मेहरबान, कदरदान, हम सब पर करम फरमाइये।

मसऊद—जनाब, मसऊदके आनेमें अभी कुछ देर है, एक दफा और कह जाइये?

का०, मु०—जनाब, मेहरबान, कदरदान, हम सबपर करम फरमाइये!

(इस अर्से में मसऊद का लिबास बदलकर असली सूरत बना लेना)

मसऊद—बस, अब आँखें खोल दो।

कासिम—अहा! मसऊद तो यह खड़ा है, पर शाह साहेब कहाँ गये?

मसऊद—क्या कहा जनाब, क्या कहा?

कासिम—शाहसाहेब कहाँ गये?

मसऊद—कहांके शाह साहेब और कहां के फकीर साहेब, कामिल यह मसऊद ही है इस अमल का आमिल।

कासिम—कम्बख्त शरीर। जब तो तूने बड़ा धोका दिया और इतनी देर हमें न बताया।

मसऊद—लेकिन बन्दे ने मिस्र में भी आपका सब काम बनाया।

कासिम—अच्छा कह दे वह हमारे कान में।

(मसऊद का कासिम के कान में कहना)

मसऊद—आया भी कुछ अक्ल के दरमियान में?

कासिम—बेशक, तू काबिले ईनाम है। लेकिन भाई महमूद को कहां छोड़ा? कहीं कयाम है?

५

मसऊद—ओह! वह किस्सा मैं फिर सुनाऊँगा।

मुहसिन—लेकिन मेरे लिये भी कोई तदबीर होगीः—

गले से है दिलबर लगाने के काबिल।
है सोने की चिड़ियां उड़ाने के काबिल॥

मसऊद—अगर काम है यह बनाने के काबिल।
तो बन्दा है ईनाम पाने के काबिल॥

पहिले एक सौ रुपये का कौल दीजिये; फिर मेरा काम देख लीजिये।

मुहसिन—मैंने तुझे कौल दिया।

मसऊद—तो मैंने भी जोतिशी का रूप लिया और इस काम को फौरन किया।

कासिम—जल्द आना।

मुहसिन—साथ ही खुशखबरी लाना।

मसऊद—क्यों घबराये जाता है, तू तो दीवाना है।

(सबका जाना)

अंक दूसरा। सीन छठवां।

खिड़कीवाला महल।

शायलाक—अफसोस मेरी लड़की को कैसा जुनूं हुआ;
ज्यों ज्यों दवाकी मर्ज उसका फ़ुजूं हुआ।
हाय! हाय! क्या यह घर मेरे कारे जबूं हुआ;
मुहसिन का इश्क वास्ते उसके जुनूं हुआ।
कुछ टोटका करूं कोई आमिल जो पाऊं मैं;
तावीज गंडा नक्श गलेमें बँधाऊँ मैं।

(शायलाक का जाना; तिलहा का आना)

गाना।

मिलेगा वह प्यारा, मेरा माहपारा;
मिटा, मिटा, दाग़ दिलका।
हरमन, मोहन, समन बदन, चलन, फबन,
मगन मगन चमन चमन है, मन सजन मिलन का॥ मि०—

(शायलाक का आना)

शायलाक—इश्क़ को जब तक तू नहीं भूलती;
देखेगी खुद को न फलती फूलती।

तिलहा—इश्क है मज़हब मेरा, इश्क है मिल्लत मेरा;
मसहफे रूये सनम दौरे तिलावत मेरा।
दीन है इश्क़ तो ईमान है मोहब्बत मेरा;
हिज्र दोजख है मेरा, वस्ल है जिन्नत मेरा।

(तिलहा का जाना)

शायलाक—ओहो, गज़ब का जुनूं है, किसी सख्त जिन्न का अफसूँ है। (बाहर से मसऊद का पुकारना)

मसऊद—है जोतिशवाला, रँग निराला, ढंग आला। झाड़ उतारूं, मन्तर मारूं, और करूं निसयान को मारूं भूत या शैतान हो जो। जोतिश वाला०—

शायलाक—अबे, तू कौन है, शोर मचानेवाला?

मसऊद—देख उल्लू ने झट मुंह से निकाला। अरे जोतिशवाला है, जोतिशवाला।

शायलाक—क्यों, पूरा जवाब नहीं देता नाकारा?

मसऊद—क्या गली रास्ते में है किसी के बापका इजारा? जोतिशवाला है, जोतिशवाला।

शायलाक—क्या आप नजूमी हैं, नजूमी ?

मसऊद—हां नजूमी हूं। मेरे इल्म की सारे जहां में है धूमः एक क्या सैकड़ों ही किस्मकी मैं जानता हूं नजूम।

शायलाक—जब तो ऐ मेहरबान ! आइये मकान के दरमियान।

मसऊद—यह लो आया, क्या है फरमान ?

शायलाक—आइये आइये, ऐ नेक नाम ! मुझे आपसे है एक काम।

मसऊद—मैं समझ गया हूँ तेरा काम।

शायलाक—कुछ मैं भी तो सुनूं।

मसऊद—(उंगलियों पर गिनके) तेरी लड़की को है जुनूं।

शायलाक—कामिल हैं अपने इल्म में जी शान; आप हैं अपने वक्त के लुकमान।

मसऊद—यह मेरी करामात की अदनी सी बात है; बन्दे को जानिये कि बड़ा नेकज़ात है।

शायलाक—जब तो ऐ रौशन ज़मीर ! कोई कीजिये तदबीर।

मसऊद—पहिले अपनी लड़की को बुलाइये, वह कैसा जुनूं है, हमें भी दिखाइये ?

शायलाक—बहुत अच्छा, मैं अभी बुलाये लाता हूँ।

(शायलाक का जाना)

मसऊद—बच्चा मसऊद, अब सँभल कर काम करना। अगर ज़रा भी चूके, तो पड़ेंगे जूते।

शायलाक—(तिलहा को लाकर) लीजिये, नजूमी साहेब ! यही मेरी बेटी है; तकदीर की हेटी है। अगर ऐसी औलाद होते ही मर जाती तो मेरी दाढ़ी को ऐब न लगाती।

मसऊद—इसमें इस बिचारी का क्या कुसूर है; यह सब इस मुसलमानका फतूर है। अरे, चेहरे की रंगत से क्या हट-

शत बरसती है। भयानक शक्ल है एक अजीब हसरत बरसती है।

शायलाक—हां, तो ऐ मेहरबान; मुश्किल कीजिये आसान।

मसऊद—आप रखिये इत्मिनान; मैं करता हूं अभी सफाचट मैदान। अच्छा, थोड़ा सा लोबान और अगर की बत्तियां मँगवाइये।

शायलाक—अभी लाया हुजूर। (शायलाक का जाना)

मसऊद—अरे बाहरे लंगूर (तिलहा से) अरी ओ लड़की दीवानी, मस्तानी, होश में आ जा बराय मेहरबानी। वरना बाज़ार में बेचकर कर लूंगा नशा पानीः—

अगर न अब भी तुझे होश बेहिजाब आया।
तो जान ले मैं तेरी जानको अज़ाब आया॥

तिलहा—ज़रा हिज़ाब न तुझको ऐ बेहिज़ाब आया;
बगल में दाब के मोटी सी तू किताब आया।
तुझे सितारा सनासी का क्या हिसाब आया;
न कोई बात का सीधा तुझे जवाब आया।
कहीं से ताड़ी तू पीकर है या शराब आया॥

मसऊद—नाम बतायें तो होश उड़ जाये, रंग फक हो जाये।

तिलहा—बक रहा है बड़ी देर से चल दूर भी हो;
कौन सुनता है तेरी बात जो मगरूर भी हो।

मसऊद—सुनले, मैं कहता हूं तेरे कान में।

तिलहा—सुनती हूं कह दे जो ध्यान में हो। (तिलहा के कान में कुछ कहना) क्या तू सच कहता है?

मसऊद—नहीं तो तुमने क्या समझा है?

तिलहा—तू मुझे धोखा तो नहीं देता है?

मसऊद—अरे, तुझे क्या तेरे बापको धोखा देता हूं।

तिलहा—तो मुझे कैसे यकीन हो।

मसऊद—तो सुन मेरा नाम मसऊद है।

तिलहा—अहा, क्या तू मसऊद है?

मसऊद—अब जो कुछ मैं कहता हूं वही करना। अच्छा अलग हो जाओ, देख तेरा बाप आता है; बन्दा भी ढंग लाता है। (शायलाक का आना) गुनगन्दुम, भबूकदानम, भूत उतारम् जंतरझाड़म् भसमम् भस्मा।

शायलाक—नजूमी साहब! यह आग और लोबान मौजूद है।

मसऊद—तो बन्दा भी मसऊद है। (मसऊद का दो ज़ानूं बैठकर अपनी जूती एक हलके में रखना और उंगलियों पर कुछ मंतर पढ़कर जूती निकाल कर शायलाक को देना) तुम इस जूती को माथे से लगाओ! (शायलाक का जूती को लगाना) अब तीन बार इसको सलाम करो। (शायलाक का सलाम करना)

मीन, मेष, मिथुन, कन्या वृश्चिक, तुला, मकर, धन।

अहा हा!! क्या अच्छी फाल निकली है।

शायलाक—मेरी समझ में नहीं आई आपकी जबान। मैं हूं गँवार या आप हैं देहाती।

मसऊद—देखिये, एक श्लोक में सारी दास्तान करता हूं बयान :—

श्लोक।

गियांजी खुसट जेहिज़ू मुहासिन दिलशजनां बेकरार गरदूं;
लगाके तुमको कलंकका टीका यह दुख्तर एक दिन फरार गरदूं।
अगरचे सद साल भी नसीहत कुनी तो आंकस असर न बाशद;

जो हमराह दोस्त रवाना बाशद, तो शहर भर में पुकार गरदूं।
अगर बजंजीर कस बजकड़ो तो जब भी घर में कभी न मानद;
शवद चूंइमरोज ई उड़नछू, तो कैसी बेटा बहार गरदूं।

कहो, क्या समझे?

शायलाक—समझे क्या खाक? कह दिया कि यह जबान मैं नहीं जानता।

मसऊद-देखिये, दूसरे; श्लोक में सब मालूम हो जायगाः-

श्लोक।

मिसाले दीबाना हाय फिर तो उठाव चूल्हा शवदये चम्पत।
न सर पर तेरे कुलाह बाशद न टाँग में ही इजार गरदूं॥

शायलाक—क्यों नजूमी साहेब! यह कौन जबान है?

मसऊद—सुनिये, इसका नाम है गड़बड़ झाला; फारसी की नानी, संस्कृत की खाला। इसको बड़े आमिल ने निकाला है। देखिये, लड़की मकर निकली है, मगर अपना असर जरूर दिखावेगी।

शायलाक—मेरी कौन सी रास है?

मसऊद—तुम्हारी रास सत्यानाश है।

शायलाक—अरे, यह तो बुरी बात है।

मसऊद—वह सत्यानाशी और यह सत्यानाश चौपट स्थान है; इसमें तो आगे चलकर बड़ा बड़ा सफाचट मैदान है।

शायलाक—अरे मेहरबान, कब होगा वह सफाचट मैदान?

मसऊद—एक रात होगी यह हलाकान; बस, सुबह को सफाचट मैदान। अब जैसा मैं कहूं वैसा तुम करो।

शायलाक—बहुत अच्छा, ऐ रौशन जमीर! कहिये, वह सफाचट मैदानवाली तदबीर।

मसऊद—देखो, वह उत्तर की तरफ पहाड़के ऊपर एक मन्दर है; बड़ी करामात उसके अन्दर है। आज रात इसे वहां ले जाइये और मन्दिर में तनहा छोड़ आइये; फिर देवी की करामात आज़माइये।

शायलाक—बहुत खूब ऐ ज़ीशान!

मसऊद—बस, सुबह को सफाचट मैदान।

(मसऊद का जाना चाहना)

तिलहा—नजूमी साहेब! आपके जाने से मेरा दम छूटता है।

मसऊद—देखो २ मुव्वकिलों ने अभी से ज़ोर बाँधा। आप जरा मुँह फेर लें मैं कुछ दम करता हूँ।

शायलाक—बहुत अच्छा। (शायलाक का मुंह फेरना)

मसऊद—अरी ओ लड़की जो मैं कहता हूं वही करना। ज़रा मत डरना। रात को हम आवेंगे तुझे मन्दिर से भगा ले जायँगे।

तिलहा—(आहिस्ता से) बहुत अच्छा (जोर से) अच्छी तो हो जाऊँगी?

मसऊद—बिलकुल। (मन्तर) इश्क धाड़ी, पन्जवाड़ी, पूजाधाड़े, मन्तर मारे, झाड़ उतारे, पदम पदमा। देखिये साहेब अब मैं जाता हूं।

शायलाक—फिर आप यहाँ कब आइयेगा?

मसऊद—अब तू मेरी हवा भी काहे को पायेगा।

(दोनों का जाना)

गाना।

तिलहा—मिलेगा वह प्यारा मेरा माह पारा,
मिटा मिटा दाग़ दिल का।

सोहन मोहन सजन बदन सम चलन फबन,
मगन मगन चमन चमन है मन सजन मिलनका॥ मि०



अंक दूसरा। सीन सातवां।

मन्दिर जंगल।

(शायलाक का मय दो नौकरों व तिलहा के आना)

नौकर—देखिये, उस देवी का यही मन्दिर है।

शायलाक—अबतो मन्दिरमें इसे छोड़ जाना चाहिये; हमको देवी की करामात को आजमाना चाहिये।

(शायलाक का तिलहा को मन्दिर में छोड़ जाना; मसऊद का कासिम व मुहसिन के हमराह आना।)

मसऊद—देखिये, वह यही मंदिर है; तिलहा जिसके अन्दर है। जाइये स्थान पर सर फोड़िये।

(मुहसिन का मंदिर के करीब जाना; कासिम का भी जाना चाहना।)

मसऊद-तुम कहां चले। इसकी तो औरत है। आपको क्या निसबत है। वाह भई वाह ! बड़े मज़े में आ गये, अभी से घबरा गये ?

मुहसिन-जुल्म की हो चुकी हद और न बेदाद करो;
दिल में अरमान हैं भरे, इनको न बरबाद करो।
अपने मुहसिन पै न अब कुछ सितम ईजाद करो;
खुल गया राज़ गमे हिज्र से आजाद करो।
आके मिल जाओ गले वस्ल से दिल शाद करो॥

(तिलहा का निकल कर मुहसिन से मिलना; मसऊद का कासिमसे चिमट जाना)

मसऊद—लाहौलबिलाकूवत आप हैं? मैं समझा कि कोई औरत खड़ी है।

कासिम—कम्बख्त, बड़ा पाजी है।

मुहसिन—अजब गुल चमन में खिला देखते हैं।
हम आँखों से अपने यह क्या देखते हैं॥

तिलहा—बुतों में जो पहिले ज़फ़ा देखते हैं।
वह आखिर उन्हींमें वफा देखते हैं॥

मसऊद—यह उल्लू वफा औ जफा देखते हैं।
हम इस नोट को बारहा देखते हैं॥

लाइये जनाब, इनाम दिलवाइये।

मुहसिन—अच्छा अच्छा, फिर मिल जायगा।

मसऊद—बातें न बनाइये, फिर विर मैं नहीं जानता हूं। क्यों भाई, आप ही इन्साफ कीजिये; नहीं तो अपने जेवर उतार दीजिये।

मुहसिन—उल्लू, जेवर लेकर क्या करेगा?

मसऊद—जब मिल जावेगा, तब देखा जावेगा।

(तिलहा का अपने गले से हार उतार कर मसऊदको देना)

तिलहा—ले, यह जेवर मेरा, खैरात के लिये।

मसऊद—तुम सलामत रहो खैरात के देने वाले।

(तिलहा और मुहसिन का गाना)

जानी मिले दोनों जानी मिले मुराद दिली पाई।
जवानी दीवानी सनम बुत लासानी।

मुहसिन—तुम बिन दिलबर घर दर तजकर,
मुज़तर दिलबर ग़म का गुज़र था।
तिलहा—तन मन जलकर जोबन ढलकर,
मन बेकल कर टुकड़े जिगर था।
मुहसिन—घरसे निकलकर, बन बन चलकर,
मिले अब खुश्तर।
तिलहा—चलत फिरत में जानी मिले॥ जानी०—

मसऊद—कुल दास्तान क्या यहीं करोगे बयान?

कासिम—हां हां, अब घर चलना चाहिये; वहीं चलकर इतमिनान से गुफ़्तगू होगी।

मसऊद—देखिये, वह खाँ साहेब घबराये क्यों आ रहे हैं।

(आना खाँ साहेब का)

खाँ साहेब—जनाब, जल्द चलिये। हवा माफिक होनेकी वजह से नाखुदा ने बादबान उठा दिया है; जहाज़ जल्द खुलने वाला है।

कासिम—भाई मुहसिन, अब जल्द चलो।

(मसऊद व कासिम का जाना, शायलाक का नौकरों को लेकर आना)

शायलाक—जुनूंकी भी अच्छी दवा हो गई। बस, अब दूर इसकी बला हो गई।

नौकर १ ला—हुजूर, अब उसे बाहर निकालना चाहिये।

शायलाक—हां हां, तुम लोग जाओ, उसे बाहरले आओ।

(नौकरों का मन्दिर में जाना)

उसकी तबीयत खूब संभल गई होगी और वह नहूसत भी निकल गई होगी। (नौकरों का मन्दिर से बाहर आना)

नौकर १ ला—अजी जनाब, वहाँ तो है सफाचट् मैदान
शायलाक—तो बस मुश्किल हो गई आसान।
यही तो मैं चाहता था सफाचट् मैदान॥
जाओ, उसे बाहर तो लाओ?
नौ० १ ला—जनाब, अबतो आप ही जाइये।
शायलाक—अच्छा अब मैं खुद ही जाता हूं।
(शायलाक का मन्दिर में जाना)
नौ० १ ला—आ गये बराती न खुश्का न चपाती।
२ रा—लख्त जिगर है न नूरे नजर है;
यह बुड्ढे के सिरमें जुनूं का गुजर है।

शायलाक—(आकर) दगा! फरेब! मकर! धोका! ऐ नजूमी दगाबाज़! तेरा खाना खराब! हाय, गई मेरी दौलत। गये मेरे ज़ेवर, गये मेरे पैसे, अब उन्हें पाऊँगा कैसे?

नौ० १ ला—उठके चलिये घर, यहाँ पर अब बहुत कुछ रो चुके।

शायलाक-इन मुसलमानों के हाथों हम तो ठण्डे हो चुके।
(जाना सब का)

अंक दूसरा। सीन आठवां।

रास्ता।

(खलासियों का गाना)

खलासी-झटपट जाओ जहाज पर चालिये,
हुई देर नहीं खबर करो, चलनेकी तैयारी।
हो हो हो झट०—
ख० २ रा-हम करते नौकरी सोहरी, मेहनत भी खूब करी;

सारंग करते सरदारी हो हो हो झट०—

ख० ३ रा—कप्तान की दहशत बड़ी, डैमफूल कह मारे छड़ी;

सुनो अपनी हकीकत सारी। हो हो हो झट०—

ख० १ ला—हमें आज जो छुट्टी दिया, खूब बेवड़ा बरांडी पिया;

फिर आये हैं दुनिया सारी। हो हो हो झट०—

यारो आज खूब मजा उड़ाया, बेवड़ा बरांडी चढ़ाया; जब पैसे तमाम हुए तो ज़री की सदरी और टोपी के दाम हुए। हो हो हो झट०—

और मैं सिंगापूर से साढ़ेसात रुपये का बूट लाया। वह एक बनिये की दुकान पर गिरवी मार खाया।

ख० २ रा—तो मैंने भी क्या कम किया, दो पौंड पर सिलवर वाच लिया और पांच रुपये पर बेंच दिया।

खलासी १ ला—पर अबतो टाइम भी हो गया है; आओ जो बाकी शराब बची है चढ़ाओ।

(सबका बैठकर शराब पीना, सारंग का आना)

सारंग—ओ यू बदमाश लोग, छाकटा लोग, तुम इधर बेवड़ा पीता है; उधर जहाज खुलता है।

२ रा खलासी—सारंग साहेब, चलो हम भी आता है।

सारंग—क्या आता है; तुम तो इधर ड्रिंक बनाता है। चलो, नहीं तो हम हन्टर जमाता है। (हन्टर चलाना)

खलासी ३ रा—अरे, तुम मारता काहेको है; हम चलता है, चलता है।

,(सबका जाना, शायलाक का आना)

शायलाक-मेरी बेटी को कोई मल्लू भगा कर ले गया।
बागसे बुलबुल को एक उल्लू उड़ाकर ले गया॥

(एक आदमी का आना)

आदमी—जनाब! आप यहां क्या राग गाते हैं; आपकी लड़की को मुसलमान भगाये लिये जाते हैं॥

शायलाक—(तमांचा मारकर) ओ मूज़ी शैतान! कहां हैं वह सब, जल्द बता वर्ना तेरी जान लूंगा।

आदमी—तू मुझको क्यों मारता है; उनको जाके ढूँढ़ता क्यों नहीं।

शायलाक—ओ नादान, तू भी तो है मुसलमान?

आदमी—हां, मुसलमान तो हूँ, पर तेरी लड़की को तो नहीं ले भागा।

शायलाक—(गरदन दाबकर) अगर मैंने उनको पाया तो इसी तरह उनकी जान लूंगा, वर्ना तुझे मारूंगा।

आदमी—अच्छा मुझे छोड़ मैं चलता हूँ। (जाना)

—o—

अंक दूसरा। सीन नवां।

दरिया।

(जहाजों का बन्दरगाह पर खड़े दिखलाई देना; खलासियों का काम करना)

कप्तान—वेल सारंग! जहाज़ अबतक नहीं चला।

सारंग—हजूर, चार कैविन कासिम ने रिज़र्व कराये हैं, उसका इन्तज़ार है।

कप्तान—वेल, हम टाइम के बरखिलाफ़ किसी का इन्तज़ार नहीं करेगा; तुम ज़हाज़ खोलो।

सारंग—लीजिये, वह आ गये।

(कासिम, मुहसिन, मसऊद व तिलहा का आना)

कप्तान—वेल कासिम! तुमलोग इतना देर क्यों लगाया?

कासिम—जो हां, कुछ ऐसी ही ज़रूरत आन पड़ी जिससे देर हो गई।

कप्तान—वेल, इट इज़ नाट गुड। तुम लोग काला आदमी कभी टाइम को नहीं देखता है। युरोपियन लोग कभी टाइम को नहीं छोड़ता है।

मसऊद—तो क्या काला आदमी किसी के बाप का नौकर है; जब जी चाहेगा तब चला आयेगा।

कप्तान—ओ यू काला आदमी, इफ यू विल स्पीक ऐनी-मोर, आई विल ब्रेक योर हेड।

(कप्तान का मसऊद को मारना; मसऊद का बेग से रोकना)

सारंग— ओ यू काला आदमी।

मसऊद—देखो देखो, यह गोरा आदमी है; अभी लंडन से पारसल होकर आया है।

कासिम—यह एक बेवकूफ आदमी है; इसकी तरफसे मैं माफी चाहता हूं।

क०—वेल नेवर माइन्ड! तुम लोग जल्दी जहाज पर चलो। सारंग! इन लोगों का सामान लाओ।

(कप्तान का जहाज पर जाना।)

मसऊद—क्या यह गोरा साहब मिर्च खा गया है, जो छेड़ते ही काटने को दौड़ा।

कासिम—चुप; क्यों बके जाता है।

सारंग—अब जल्दी करो।

कासिम—मसऊद, सामान उठा।

मसऊद—(हाथ लगा कर) मुझसे यह सामान नहीं उठेगा।

मुहसिन—क्यों मरा जाता है; कहीं एक गधे का भी पूरा बोझ तो नहीं है।

मसऊद—एक क्या बल्कि दो गधों का बोझ है। खैर चलिये, क्यों भाई सारंग, तुम्हारे जहाज में कोई लम्बी दाढ़ी वाला भटियारा तो नहीं है। जो हमें सराय में मिला था।

सारंग—नेवर माइन्ड, नेवर माइन्ड।

मसऊद—अबे, सीधी विलायती बोल; मैं उर्दू नहीं समझता।

(मसऊदका सारंग को चाँटा लगाना; सारंगका दौड़कर जहाज पर जाना। जहाज का चल पड़ना; शायलाक का आना।)

शायलाक—जहाज को रोको! जहाज को रोको! उसमें मेरी लड़की भागी जाती है।

मसऊद—लो, वह बूढ़ा खब्बीस भी आ गया।

शायलाक—रोको रोको, ओ कप्तान, ओ बेइमान कप्तान! नहीं सुनता शैतान?

मसऊद—अबे; सर क्या धुनता है; दरयामें कूद पड़।

(जहाज का चले जाना; शायलाक का सिर पीटते रहना)

ड्राप सीन।

—:०:—

अंक तीसरा। सीन पहिला।

सजा हुआ महल।

(शीरीं का गाना।)

मोरा सइयां, मिलत नहीं गोइयां,
दरस दिखलइयां, तरस गई जान।
अरे, सइयांने मोहे तरसइयां, जियरा कलपइयां, न कीनो मेरा ध्यान।

तड़प तड़प रैन दिन चैन पड़त नाहीं।
बरस बरस तकत दरस मिलत नाहीं।
क्या करूं गोइयां कलियां जोबन मुरझइयां झुलस गयी शान ॥ मोरा०—

सलीमा—बिगड़े हुए जो काम हैं अकसर बन आयेंगे।
जब आयेंगे तो आप के दिलबर बनायेंगे ॥

शीरीं—मत छेड़खानी कर, तू सलीमा जरा तो खुदा से डर।
मैं इंतेज़ार करते हुए जाऊंगी गुज़र ॥

सलीमा—मत बेक़रार हो ऐ मेरी जान सब्र कर।
यह कौन आ रहा है कलूंटा मुआ इधर ॥
(मसऊद को आते हुए देखकर) यह निगोड़ा है वही मसऊद गप्पी। खैर। (मसऊद का आना)

शीरीं—मसऊद ! अहा हा ! आया तो लाया भी खुशख़बर?

मसऊद—तशरीफ लाये देखिये वह खुद हैं नामवर।
(आना कासिम का)

शीरीं—है शक्र लाख शुक्र खुदावन्द दादगर।
यह शक्ल प्यारी प्यारी जो आई हमें नज़र ॥

कासिम—जलवये दीद का मुश्ताक है कब से कोई।
दर्द हिज्र से दिले शाक है, कब से कोई ॥

मसऊद—मुन्तज़िर लायक इनाम है कबसे कोई।
खुश अन्जाम का आग़ाज है, कब से कोई ॥

शीरीं—ऐ किसी के दिल पर कबज़ा करनेवाले, खौफ़ खुदा से न डरनेवालेः—
मुझ पै ज़ालिम तेरी बातों का असर है कि नहीं।
मर रहा है कोई फुरक़त में, खबर है कि नहीं ॥

कासिम—जो सितम मैंने सहा वह कोई क्या जानता है।

दिल मेरा जानता है याकि खुदा जानता है॥

सलीमा—मेहरबानमन, तशरीफ रखिये।

कासिम—तकलीफ न फरमाइये; अब वह संदूक मंगाइये; मेरी किस्मत आज़माइये।

शीरीं—ऐसी तार्मीब न फरमाइये; ठैर जाइये। दो चार रोज मेहमानी से न इज़तेनाब कीजिये; फिर शौक से सन्दूक इन्तखाब कीजिये। काश मेरी किस्मत ने मुझे नाकाम ही रखा तोः—

जिन्दगी का मेरे फिर कोई सहारा न रहा।
तुम रहे ग़ैर के और कोई हमारा न रहा॥

कासिम—दो चार रोज़ की मेहमानी से क्या खाक लुत्फ़ उठायेंगे। बस, अब वह सन्दूक़ ही मंगाइये; देर न लगाइये। अगर फज़ले खुदा शामिल हाल है, तो हमेशा के लिये तुम्हारा विसाल है।

शीरीं—मगर ऐ दिलदार, गमख्वार, ज़रा होशियारी इसका मआल है; यह संदूक नहीं; हमारे तुम्हारे मुकद्दर की फाल है।

कासिम—कुछ गम न कीजिये; खुदा कादिर व जल्लो ज़लाल है।

सलीमा—सन्दूक मंगवाने से पहिले हम आपको एक शर्त समझाते हैं कि, दर सूरत नाकामयाबी अगर आप इस राज़ को ज़बान पर लायेंगे, तो मुशाफिजात तिलस्मात आपका गला दबायेंगे।

कासिम—मुझे सब कुछ मन्जूर है; यह बात अक्ल से कब दूर है।

शीरीं—अच्छा होशियार, ऐ प्यारे दिलदार! ऐ मुव्वकिलां अजायबात, दिखला अपनी करामात।

(शीरीं का ज़मीन पर पाँव मारना; महल का ग़ायब होना;

डरावनी शक्लों का नमूदार होना; सन्दूकों का ज़मीन से निकलना)

कासिम--खैर, इलाही खैर, खैर।

गाना।

यह मकान कारस्तान, हर जमात परेशान। खुद गम है सारी, अजब सेहरकारी, मिले गुल॥ यह म०-

जहांदार तू लाचार का हो यार मददगार॥ यह०-

मनशा हुई पूरी कर मेहर दिखादे शबीह दिलजान॥ यह म०-

ऐ खालिक दो जहां! मालिके कानो मकां, अगर तू मददगार है, तो बेड़ा पार है:-

किश्तिये नूह को दरिया से निकाला तूने।
चश्मे याकूब को बख्शा है उजाला तूने॥
मैं भी एक बन्दए नाचीज हू बन्दा तेरा।
गो गुनहगार हूं, रखता हूं भरोसा तेरा॥

(संदूक के करीब जाकर के)

यह संदूक सोने का है। यह वह सोना है कि जिसे सलातीन ज़माना जमा करते करते मर गये; जान से गुजर गये। लेकिन खाली हाथ पेशे दावर गये। उनके काम कुछ न आया:-

जुल्म मज़लूम पर करते थे जो सोने के लिये।
चल बसे ज़ेरे खाक़ ओ सोने के लिये॥

और यह दूसरा संदूक़ चाँदी का है। इसका भी यही हाल है। चमक जोरो शगाल है; इन दोनों की एकही मिसाल है। चाँदी से सोना, सोनेसे चांदी। लौंडी से गुलाम, गुलाम से बांदी। लेकिन कम क़द्र लोहे की है। फीकी फीकी रँगत कमसिन माशूक के हुस्न मलीह की तरह दिल को लुभाती है; इसमें तर्ज माशूकाना पाई जाती है। बस, नहीं है, सब्र

का यारा ; लीजिये इम्तहान खतम हुआ हमारा। इस संदूक की कुंजी दीजिये।

सलीमा—आपको अख्तियार है, यह लीजिये।

(सलीमा का कासिम को कुंजी देना; कासिम का सन्दूक खोलना। भूतखाना ग़ायब, परिस्तान का नमूदार होना। एक ब एक चारों तरफ रोशनी हो जाना ; शीरीं की तसवीर को संदूक से निकालना, साथ ही परदे का गिरना।)

अंक तीसरा। सीन दूसरा।

रास्ता।

(ज़ार को गिरफ्तार करके सिपाहियों का लाना।)

गाना।

ज़ार—खुदाया सर पर क्या तूफान।
हुआ घर छुटकर सर गरदान।
भरोसा तुझ पर है हर आन। तू है सुभान,
ऐ इज़दान॥ हां तू जग का है सुलतान, चली अब जान॥
सरवर बरतर, खालिक अकबर, दावर सबका।
कमतर बन्दा सरगरदान, सुभान कर दरमान,
बार बार बेशुमार हाल ज़ार पर हो मेहरबान॥
खुदाया०— (शायलाक का आना)

सिपाही १—हस्ब ज़ाब्ता कानून वारंट गिरफ्तारी आप के पास लाये हैं।

सिपाही २ रा—आप कुछ फैसला करना चाहते हैं या हवालात में ले जायें।

शायलाक--ता फैसला अदालत मबहूत रहे; अब दूर ही मेरे नज़रों से मनहूस रहे।

ज़ार--ऐ शायलाक! रहम कर। मुझे फक्त दो रोज की मुहलत दे, मैं तेरी कुल रकम अदा कर दूंगा।

शायलाक--क्यों, क्यों कहां गई वह शोखियां, कहां गईं वह फबतियाँ। दूर ओ मग़रूर, मैं औरों की तरह गर्दन हिला हिला कर तेरे हाल पर रहम खाने वाला नहीं; बग़ैर तेरा आध सेर गोश्त लिये बाज़ आने वाला नहीं।

ज़ार--देख ज़रा ख़याल कर, मुझे न पालाम कर:--

रहा जो दिल में हसीनों के ओ गुबार हूं मैं।
खुदा की शान अब ऐसा नहीं फ़ोज़ार हूं मैं॥

शायलाक—ज़ार, ज़ार, कहां का ज़ार, अरे ओ दिल आज़ार, तेरे नाम से हूं बेजार। तुझ को लगाऊं सरे बाजार हज़ार हज़ार पैज़ार, तेरी ही राय से मेरी लड़की हो गई फ़रार।

ज़ार—क्या तू जानता है कि इसमें मेरी भी कोशिश थी?

शायलाक--कोशिश कैसी, तेरीही तो साज़िश थी।

ज़ार—तू झूठ बोलता है।

शायलाक—और तू सच्च कहता है।

ज़ार--इतना ही रहम कर कि एक दफ़ा घर जाने दे, लड़के बालों से मिल आने दे।

शायलाक--मुफ्त क्यों सिर धुनता है; तेरी आहोज़ारी कौन सुनता है। सिपाहियो! लेजाओ इसे जेलर के सुपुर्द करो।

(शायलाक का जाना)

ज़ार—है शोर फ़लक तक मेरी इस नौहागिरी का।
क्यों इसपै असर है नहीं सोज़े ज़िगरी का॥
क्या हाल है देखो यह मेरी बे'सबरी का॥

वल्लाह के हंगामा है अब बे खबरी का।
ऐ नालये दिल! ज़ब्त नहीं बे असरी का॥

सिपाहियो! तुमही ज़रा मेरे हाल पर तरस खाओ; थोड़ी देर के लिये मुझे मकान तक ले जाओ।

सिपाही १ ला—तू क्या बकता है; तुझपर रहम कौन कर सकता है?

ज़ार—तू भी भूल गया, नहीं पहचानता कि मैं कौन हूं।

सिपाही २ रा—क्यों नहीं जानते हैं। तू शायलाक का करज़दार मुजरिम ज़ार है।

ज़ार—ऐ ओ बेमुरव्वत, तुझ पर खुदा की लानत। क्या वे दिन भूल गये जो चार चार पैसे के लिये मेरी दुकान की खाक छानते थे।

सिपाही १ ला-अरे ओ नादान, तू अपने गुज़रे हुए वक्त को अब तक याद करता है:—

सदा ऐश दौरा दिखाता नहीं॥
गया वक्त फिर हाथ आता नहीं॥

दूसरा—हमको क्या गर्ज़ है जो किसी के दुःख दर्द के लिये अपना फ़ायदा गँवायें।

पहिला—बस चलो, अब देर होती है।

ज़ार—अरे मूज़ी कम्बख्तों! तुम पर खुदा की मार हो; मर्द होकर ज़र पर निसार हो। (सिपाहियों का ज़ार को ले जाना)

अंक तीसरा। सीन तीसरा।

सजा हुआ महल।

(कासिमो शीरीं का गाना)

दिलदार यार, हम किनार, लालाज़ार, पुरबहार, बना दिल

बेकरार था। ख़तर गया, वह डर गया, दिलपर नज़र इधर तू कर चमन दिलारा बना। क्या हरहर दरदर गुन का दिल पर मिलकर जोबन दरसा, हम पर सरवर का बरसा। दरसा अनवर दिलपर मिलकर गुलतर खिलकर हुन बरसा॥ दि०—

कासिम—मुहाफिले इशरत है या शोला है बर्के तूर का।
है अजब शादी के दिल, खुश है हरेक रंजूर का॥

शीरीं—आरज़ू मुद्दत की थी, जिस दिन कि वह रोज है।
अज्म था जिस बज्म का यह वह तर्बन्दोज़ है॥

(सहेलियों का नाचना)

गाना।

झूम झूमकर आला चले मतवाला।
जोबन वाला मोरा बृजलाला रे॥

तीखी तीखी नज़रों वाला, चितवन गुन हरे गुने मोती वाला॥ झूम०—

कासिम—आज आँखों में नूर है, दिल में सुरूर है।

मुहसिन—आपकी खुश नसीबी का ज़हूर है, जिससे बन्दा भी मसरूर है।

मसऊद—और देखो, बन्दा क्या गोरा गोरा नूर है और मेरी बीबी कैसी काली काली शबे दैजूर है।

सलीमा—दूर मुए, तेरी किस्मत जागी, जो मैं बेगम की बदौलत तेरे, पाले पड़ी। मुझे तो होता है अचम्भा कि तू है बाबर्ची खाने का खम्भा या ख़त डालने का बंबा।

मसऊद—ख़त डालने का बम्बा नहीं; बल्कि दिल की लगी को बुझाने का बंबा। मगर देखो, वह खां साहेब कैसे आ रहे हैं।

खां साहेब—(आकर) हुज़ूर, कोई ग़रीबुलवतन आया

है ; आपसे मिलना चाहता है।

कासिम—अच्छा जाओ, उसे मेरे पास ले आओ।

(खां साहेब का जाना)

मसऊद—जनाबमन, मैं भी तो गरीबुलवतन हूं। जो कुछ देना दिलाना हो, वह मुझ ही को दे दीजिये। (बाहर देख कर) यह तो मियां महमूद ; यहां भी आ हुए मौजूद।

(महमूद का आना)

कासिम—(उठकर) भाई जान ! मुझ से जो कुल कुसूर हुआ हो, माफ फरमाइये।

महमूद—ऐ अज़ीज़ बातमीज़, मुझको किसी की क्या शिकायत है। जो कुछ मैंने तुझ पर जुल्म किया इसकी नदामत है।

कासिम—अब किसी बात का ग़म न कीजिये ; यह सब मेरेही कुसूर का जवाब मुयस्सर हुआ। अब आप हम्माम में तशरीफ़ ले जायें, लिबास बदल आयें। मसऊद ! आपके हमराह हम्माम में जाओ और उम्दा पौशाक बदलवा दो।

मसऊद—(आहिस्ता से) जनाब, इस नंग-खान्दान को नंगाही रहने दीजिये।

कासिम—चुप ओ नादान, तू क्या जाने बुज़ुर्गों की शान। हज़ार उससे हुई बेवफाई है ; मगर मेरा हकीकी भाई है।

मसऊद—अच्छा तो गुदड़ी बाज़ार से कोई कपड़ा मोल ले दूं ?

कासिम—चुप, बक बक न कर। (महमूद से) आप जायें और लिबास बदल आयें।

महमूद—जी, अब मुझे किसी बात की ख्वाहिश नहीं है।

मसऊद—ह्विस्की के सिवा किसी से साज़िश नहीं है :—

महमूद—कर चुका पेश दुनिया हेंच है।
मालो ज़र क्या करूंगा हेंच है॥

उम्र बाकी सिर्फ यादे हक़ में हो।
सीमो ज़र लालोगौहर क्या हेच है॥

मसऊद—वहां भी जुआ खेल खेलके शराब पीयेगा।

कासिम—खैर, जो आपको मंजूर है।

महमूद—अच्छा, तो मैं इस वक्त जाऊँगा; फिर कभी आऊँगा।

कासिम—जो मर्ज़ी।

महमूद—अस्सलाम अलैकुम।

कासिम—वॉलैकुमस्सलाम।

महमूद—(मसऊद को) सलाम।

मसऊद—नमस्कार।

(जाना महमूद का; खां साहेब का आना)

खां साहेब—ऐ आलीबकार! किसी का ख़त लाया है ताबेदार।

(कासिम का ख़त लेकर पढ़ना और अफ़सोस करते हुए ग़श खाकर गिर पड़ना)

शीरीं—अरे कोई दौड़ो। शिताब, लाओ गुलाब।

मसऊद—बहुत अच्छा, लाया जनाब।

(मसऊद का गुलाब लाकर कासिम पर और बाद सलीमा पर छिड़कना और थोड़ा खुद पीना)

अरे, यह गुलाब है या तेज़ाब है। मैं क्या जानता था कि ऐसा कड़वा होता है। (सलीमा से) मोटी, बोलती नहीं है; चुपकी खड़ी देखती है।

मुहसिन—भाई कासिम, होश में आइये; कुछ हाल तो सुनाइये।

कासिम—हाय अफ़सोस! इस ख़त से खून की बूँदें टपकती हैं।

शीरीं—ओफ़! यह क्या माज़रा है। प्यारे कासिम, यह किसका ख़त है?

कासिम--यह ख़त उस दोस्त का है जो सलूक करने में अपनी नज़ीर नहीं रखता। सच पूछो तो उसीकी बदौलत मुझे आपके पहलू में बैठना नसीब हुआ।

शीरीं—उनकी बदौलत क्योंकर?

कासिम—छः हज़ार रुपये मुझे एक बेदर्द यहूदी से कर्ज़ अपने ज़मानत पर दिलाया था और अपने जिस्म का आध सेर गोश्त उस जालिम की दस्तावेज़ में लिख दिया था। उसकी मियाद गुज़र गई है, अब वह इस आज़ार से गिरफ्तार है।

मुहसिन—हक़ीक़त में उस पर बहुत नाज़ुक वक्त है।

कासिम—जिसने लूटा मज़ा जवानी का।
हुआ कुश्ता वह नातवानी का॥
लब जो ख़न्दा हुए मसरत से।
हुए वह आशना शिकायत से॥

शीरीं—तो यह बात क्या मुश्किल है; जिस क़दर रुपया चाहे ले जाइये और अपने दोस्त को छुड़ा लाइये।

क़ासिम—सच है। मगर तुम्हें छोड़ता हूं तो शर्त वफ़ा से मुंह मोड़ता हूं और जो उस दोस्त का ख़याल होता है, तो अज़हद मलाल होता है।

शीरीं—नहीं, नहीं; मुझे ज़रूर छोड़िये और उस नेक काम की तरफ़ मुँह जोड़िये।

कासिम—ऐ प्यारे, मेरे दोस्त मुहसिन!

मसऊद—(तमसखुर से) ऐ मेरी प्यारी बीबी सलीमा।

कासिम—यह सब सामान तुम्हारी सुपुर्दगी में छोड़कर जाऊँगा और खुदा ने चाहा तो बहुत जल्द अपने दोस्त को छुड़ाकर लाऊँगा।

मुहसिन—मुझे आपकी तामील हुक्म मंज़ूर है।

कासिम—मसऊद, तू हमारे साथ रहेगा।

मसऊद—बहुत खूब। ज़रा मैं भी अपने मन्ज़ूर नज़र को वसीयत कर दूं। (सलीमा से अलग जाकर) बड़ी जोटी, बड़ी चोट्टी! रोज़ आम चुन के खाती है। देख, तू मेरे वास्ते कहीं रोना धोना नहीं; चूड़ियाँ तोड़ के चुपचाप कोने में बैठी रहना।

सलीमा—चल निगोड़े, दफ़ान भी हो।

कामिस—अच्छा प्यारी, अब मैं रुख़सत होता हूं।

शीरीं--फी अमानअल्लाह।

मुहसिन—खुदा हाफिज। (कासिम और मसऊद का जाना।)

शीरीं—(सलीमा से) मेरा इरादा है कि मैं बहेसियत एक वकील के बोग़दाद जाऊँ और उस सौदागर को यहूदी के पंजे से छुड़ाऊं। अच्छा, मैं एक वकील का लिबास पहिनती हूं और तू भी एक मोहर्रिर की पोशाक पहिन।

सलीमा—बहुत अच्छा।

शीरीं—भाई मुहसिन, मैं अपने शौहर की सलामती और उनके दोस्त के लिये रिहाई की दुआ माँगने एक इबादतगाह में जाऊंगी। वापसी तक यहां का इन्तज़ाम तुम्हारे ज़िम्मा पर छोड़ूँगी।

तिलहा—मैं भी आपके हमराह चलती हूं।

शीरीं--नहीं, तुम यहां रहो; मेरे साथ तकलीफ न करो।

मुहसिन--मैं आपका हर तरह फ़रमाबरदार हूं।

सलीमा—अब चलिये और रवानगी का सामान कीजिये।

(सलीमा और शीरीं का जाना)

अंक तीसरा। सीन चौथा।

रास्ता।

शायलाक—खूब हुआ कि दुश्मन मेरा मग़लूब हुआ। अब मैं अपने कीने का रंग दिखाऊं; आध सेर गोश्त लेकर उसका लोहू बहाऊँ:-

दुश्मन वह मेरे दीन का, तो मैं जान का दुश्मन।
वह जान का दुश्मन, तो मैं ईमान का दुश्मन॥
वह रहता था हर वक्त मेरी शान का दुश्मन।
पर अब तो हुआ उसके मैं अरमान का दुश्मन॥
मैं अनक़रीब बदला अदालत से पाऊंगा।
उम्मीद पूरी अपनी शरारत से पाऊंगा॥

(नौकर का आना)

नौकर—जनाब, कुछ आपने सुना। कासिम मिश्र से आ गया।

शायलाक—यह तुझे कैसे मालूम हुआ?

नौकर—अभी अदालत से उसने जमानत देकर ज़ार को छुड़ा लिया है।

शायलाक—क्या यह दुरुस्त बयान है?

नौकर—इसमें आपको कुछ गुमान है?

शायलाक—ओहो! मामिला कहीं बिगड़ न जाय। मगर नहीं; कुछ नहीं होने वाला है। मैंने भी वह दाँव निकाला है; क्या दस्तावेज़ का लिखा किसी ने टाला है।

नौकर—मगर अब यहां क्या कर रहे हो; जाओ कोई तदबीर करो।

शायलाक—मैं अभी दारोगा जेल से मिलता हूं; कब अपनी तदबीरों से हिलता हूं। (जाना दोनों का)

अंक तीसरा। सीन पांचवां।

महल ज़ार।

ज़ार—समझा था मैं कुछ, चर्ख ने कुछ और दिखा दिया।
गरदिश ज़माने ने की, यह नया दौर दिखा दिया॥
काफ़िर ने अदावत का अजब तौर दिखा दिया।
आफ़त में फंसी जान सितम जौर दिखा दिया॥

कासिम—भाई ज़ार, आप इस कासिम की बदौलत किस आज़ार में गिरफ्तार हुए:—

आप पर होते हैं, जालिम के सितम मेरे सबब।
आपने क्या क्या सहे रंजो अलम मेरे सबब॥

ज़ार—भाई कासिम, कोई अन्देशा न करो; यही ग़नीमत है कि आपका अच्छे वक्त पर आना हुआ। आपका आना मेरी रिहाई का बहाना हुआ। देखिये, आज कचहरी में क्या होता है।

कासिम—भाई चलो, अदालत में जिस क़द्र रुपया दरकार है, मेरे हमराह तैयार है। मैं आपकी हर आफत अपने सर लूंगा; आप पर किसी तरह का जुर्म न आने दूंगा।

ज़ार--शर्तिया अगर मैं किसी बला में फंस जाऊं और बेरहम यहूदी सितम पर ही आमादा हो, तो मेरे लिये कुछ अफ़सोस न करना।

कासिम--हत्तल मक़दूर मैं आपको बला में आने दूं, मुमकिन नहीं। (सब का जाना)।

अंक तीसरा। सीन छठवां।

कोर्ट।

(वकील, मोहर्रिर, चपरासियों और लोगों का जमा होना ; जज का आना ; सबका ताज़ीम देकर बैठना ; सरिश्तेदार का मिसिल देखकर कहना)

जज--ज़ार आया ?

ज़ार--जी हां ; मैं हाज़िर हूं।

जज--ज़ार तुम पर बहुत तर्स आता है कि तुम ऐसे ज़ालिम की जवाबदेही के लिये खड़े हो ; जिसमें रहम नाम को नहीं।

ज़ार--हुजूर ! मैं खूब जानता हूं। आपने इस यहूदी के सख्त बर्ताव को नर्म करने में कोई दक़ीक़ा उठा नहीं रखा।

जज--शायलाक आया ?

शायलाक--हाज़िर हूं सरकार।

जज--शायलाक, तुमको ग़ौर करना चाहिये कि इस ग़रीब सौदागर की कमर तोड़ देने को इसके नुकसानात ही क्या कम हैं। इस पर तुम और ज़ुल्म कर रहे हो।

शायलाक--अपने ख्यालात से आपको पहिले ही आगाह कर चुका हूं। ज्यादा कहने की क्या ज़रूरत है।

कासिम--मैं तुम्हें छः हज़ार की जगह बारह हज़ार देने को राज़ी हूं। यह लो और दावे से बाज़ आओ।

शायलाक--यह बारह हज़ार क्या, अगर तुम १२ हज़ार के हर एक हिस्से को बारह बारह हिस्सों में तकसीम करो जब भी मैं न लूंगा। मैं अदालत से जुर्माना पाने की दरख्वास्त करता हूं।

जज--शायलाक, हम जानते हैं कि तुम उस वक्त तक

अपनी हठ क़ायम रखोगे, जब तक इस सौदागर का आख़िरी वक्त न आ जाये।

शायलाक—बेशक, अपनी हठ से उस वक़्त तक बाज़ न आऊंगा; जबतक कि मेरा हाथ इसके ख़ून से न भर जाये।

जज—जब तुम्हारे रुपये से ज़्यादा रुपया मिलता है, तो क्यों इनकार करता है?

शायलाक—हुज़ूर! मैं मज़बूर हूँ। क्या करूं अपने पाक दीन की कसम खा चुका हूँ।

जज—अपने मुनसबी अख़्तियारात से जो मुझे कानून ने दिये हैं, चाहता हूँ कि इस मुकद्दमें को दूसरे रोजपर उठा रखूं।

मसऊद—बेहतर होता कि इस मुकद्दमें को क़यामत तक उठा रखते कि ख़ुदा जैसे हाकिम आदिल के आगे पेश होकर फैसला हो जाता। (आना सलीमा का मोहर्रिर के लिबास में)

सलीमा—जनाबआली, मैं एक वकील का मोहर्रिर हूँ जो शीरीं की तरफ से ज़ार के मुकद्दमें में बज़रिये वकालत मिश्र से भेजे हुए आये हैं; उनके लिये क्या हुक्म होता है?

जज—जरूर आयें, उनके लिये आना बहुत ख़ूब होगा।

(सलीमा का जाना)

मसऊद—यह तो अजब किता का मोहर्रिर मालूम होता है।

(आना सलीमा का बलिबास मोहर्रिर के, शीरीं का बलिबास वकील के)

शीरीं—तसलीमातअर्ज है।

जज—मैं आपके आनेपर निहायत ख़ुशी ज़ाहिर करता हूँ।

शीरीं—मैं भी यकीन करता हूं कि आपके इजलास में मुमताज़ हूँ। (बैठकर) इसमें कौन मुद्दई और कौन मुद्दाले है?

जज—ज़ार और शायलाक सामने आओ!

शीरीं--मैं मिसिल देखने की दरख्वास्त करता हूँ। क्योंकि नकल मुकद्दमा मेरे पास नहीं है।

जज--क्या मुज़ायका है। (मिसिल देना; शीरीं का देखना)

शीरीं--क्या आपका ही नाम शायलाक है?

शायलाक--हां मुअज्ज़ज वकील साहेब, मेराही नाम शायलाक है।

शीरीं--वाकई तुमने अजीब पेंचदार मुकद्दमा दायर कर रखा है, जिससे जज साहेब सख्त हैरान हैं। मगर बोग़दाद का कानून तुमको इस दावे से बाज़ नहीं रखता और यहां का मुनासिफ जज तुम्हें मज़बूर होकर इस सौदागर पर डिगरी देवेगा।

शायलाक--वाह रे मेरे लायक़ वकील! इन्साफ इसी को कहते हैं और वकालत इसी का नाम है।

शीरीं--और क्या साहेब आपही ज़ार हैं, जो इस ज़ालिम के पञ्जे में गिरफ्तार हैं?

ज़ार--जी हां मुझही पर इनके वार हैं।

शीरीं--मैं मिसिल के रुयेदात पर लाख ग़ौर करता हूँ। मगर कोई सूरत नज़र नहीं आती। लेकिन सौदागर साहेब, मेरा ख़याल है शायद आपको इस तमस्सुक के लिखने से इनकार हो।

ज़ार--इनकार क्योंकर हो सकता है, मुझे इक़रार है।

शीरीं--फिर आपको सीना खोलकर तैयार होना चाहिये। लेकिन ऐ यहूदी! तू इस सौदागर का गोश्त लेकर क्या करेगा? इसका ठीक ठीक जवाब दे, या इसके हालपर रहम कर। जज साहेब की भी यही राय है कि तू दावे से बाज आ।

शायलाक--न मैं दावे से बाज आऊंगा और न किसी तरह

का रहम करूंगा। लेकिन इसके जवाब में कि मैं गोश्त लेकर क्या करूंगा। फर्ज कीजिये कि, किसी मूजी जानवर ने मेरे घर में सर उठा कर रखा हो और उसको ज़ाया करने के लिये बीस हज़ार रुपया फूंक डालूंगा तो मुझे कौन रोक सकता है। इसका गोश्त अगर किसी इनसान के काम में नहीं आ सकता, तो मेरे कुत्ते की ग़िज़ा होगी और बुग़दाद का मुनासिफ जज मुझे बाज़ रखे तो उसकी बदनामी उसके क़ानून और इस शहर की आज़ादी पर है।

शीरीं—अच्छा मैं दस्तावेज़ देख सक्ता हूँ ?

(शायलाक का दस्तावेज़ दिखाना)

शायलाक—देखिये, शौक़ से देखिये। इसमें कोई फिक़रा फरेबन् नहीं लिखा गया है। महज़ मामूली फिक़रे हैं, जो हर दस्तावेज़ में हुआ करते हैं। इसके हर एक लफ्ज़ से क़ातिब की रज़ामन्दी ज़ाहिर होती है। (शीरीं का दस्तावेज़ पढ़ना)

जज—शायलाक ! हम तुमसे फिर कहते हैं कि तुम इस ग़रीब सौदागर पर रहम नहीं करते ; काश तुम भी किसी आफत में फँसो तो उस वक्त तुमको दुनिया में किसी से क्या उम्मीद हो सकती है ?

शायलाक—जब मैंने कोई ऐसा काम ही नहीं किया, तो किसी के रहम से क्या गर्ज़ ?

शीरीं—ऐ यहूदी ! बेशक तुम्हें रहम करना चाहिये।

शायलाक—यहां पर तो रहम हर किसीका तकिया कलाम है। मैं समझता था कि, आप एक लायक़ वकील हैं, किसी क़ानूनी गिरफ्त से अपने मुअक्किल की जान बचाएंगे। मगर आपने भी वही पुराना दुखड़ा दुहराना शुरू कर दिया, रहम, रहम, कहना अख्तियार कर लिया।

शीरीं--क्या रहम को तू कोई मामूली चीज़ समझता है। देख, इसके सिफत में कितनी कितनी खूबियां हैं। जो शख्स किसी पर रहम करता है, उसे भी निहायत ही मसरत हासिल होती है। जिस पर रहम किया जाता है, उसे भी बेहद खुशी होती है। अगर बादशाह में यह सिफत न हो तो उसके सर का ताज़ उसकी कुछ इज़्ज़त अफजाई नहीं करता। ऐ यहूदी, गोकि तू इस वक्त इनसाफ इनसाफ पुकार रहा है; मगर ज़रा ग़ौर तो कर कि खुदाए आदिल सिर्फ इनसाफ ही से काम ले और अपना रहम शामिल हाल न करे, तो हमारे आमाल हमें सीधे जहन्नुम का रास्ता दिखा रहे हैं। ऐसी हालत में हम किसी को नज़ात की उम्मीद न करनी चाहिये। पस, तू ऐसी लतीफ चीज़ से क्यों महरूम रहता है; जिसे खुदा भी पसंद करता है।

शायलाक—सुभानअल्ला! इजलास क्या है गोया सोहबत व अज़ोनसीहत है। भला, तो मैं अपने सिर किसी किस्म का गुनाह क्योंकर ले सकता हूं, अपनी अपनी मंज़िल अपनी अपनी दौड़। मुझसे रहम की दरख्वास्त बिलकुल फुजूल है।

शीरीं--शायलाक! जज साहेब ने तुझे डिगरी इस सौदागर पर दे दी। अब तुझे अख्तियार है कि आध सेर गोश्त इसके जिस्म का, जहां से चाहे तराश ले। और ज़ार, तुम्हें भी सीना खोलकर तैयार रहना चाहिये। जो कुछ कहना हो बतौर वसीयत के कह लीजिये। क्योंकि आप की रिहाई ग़ैरमुमकिन है।

ज़ार--भाई कासिम, मेरा आखिरी सलाम क़बूल करो। अब मेरा ज़िन्दा रहना ग़ैरमुमकिन है। हरगिज़ यह ख्याल न करना कि मेरी मौत के बाइस तुम्हीं थे, इसमें तुम्हारा क्या कुसूर है। वही होता है जो खुदा को मन्ज़ूर है। अगर इस संगदिल यहूदी ने गहिरा जख्म लगाने में कमी न की, तो मैं तुम्हारे सामने

इसके बार से सुबुकदोश हो जाऊंगा।

कासिम--यह क्योंकर हो सकता है कि, मेरे एवज़ तुम हलाक हो, क्यों न मेरा ही सीना चाक हो। ऐ मुनासिफ जज! मेरी जमानत का इस पर जुर्म है। जब मुज़रिम खुद मौजूद है, तो ज़ामिन रिहा हो सकता है। आध सेर गोश्त यह कासिम ही दे सकता है।

शायलाक—कासिम, तुम क्यों कोशिश कर रहे हो, बुग़दाद का क़ानून मुझे इसीसे दिलवायेगा।

जज--बेशक कानून नहीं कहता कि कासिम का गोश्त लिया जावे।

ज़ार--भाई कासिम! आओ, गले तो मिल लूं।

(कासिम का ज़ार से गले मिलकर रोना)

शायलाक—तुम्हें रोने धोने से कब फ़ुरसत होगी? मुझे और भी काम है; अपना वक्त ज़ाया मैं नहीं कर सकता।

शीरीं—(उठकर) अच्छा तराजू और छुरी लाया है?

शायलाक--जी हां सब मौजूद है।

शीरीं--तो एक ज़र्राह भी बुलवाइये ताकि फौरन जख्म बन्द कर दे। वरना ज़ियादा खून निकलने के सबब यह मर जायेगा।

शायलाक--यह तमस्सुक में लिखा है?

शीरीं--लिखा तो नहीं है। लेकिन इसके साथ जो इतना सलूक करेगा, तो तुझे सवाब मिलेगा।

शायलाक--जिसने इतनी दूर से आपको बज़रिये वकालत भेजा है, उसने इतना न किया कि एक जर्राह भी रवाना कर देता। शायद आपने याद न दिलाया होगा।

जज--यह वक्त बहुत नाजुक है। तुमको ख्याल करना

चाहिये। (शायलाक का छुरी तेज़ करते हुए ज़ार के करीब जाना चाहना)

शीरीं--ठहर, ठहर, ऐ यहूदी। इसमें एक कानूनी गिरफ्त है।

शायलाक--वह क्या ?

शीरीं--देख, तमस्सुक अपने मश्शरेह अलफाज से खून एक क़तरा नहीं दिलाता है! सिर्फ आध सेर गोश्त साफ बताता है। (शायलाक का हैरान होना)

हां खामोश क्यों हुआ, अपना काम कर। मगर ख़बरदार, एक क़तरा खून का इसके जिस्म से न गिरने पाये।

शायलाक--तो क्या यह कानून में लिखा है ?

शीरीं--हां, तुझे कानून दिखा दिया जायगा।

मसऊद—वाहरे मेरे मेरे लायक वकील, इन्साफ इसको कहते हैं और वकालत इसी का नाम है।

शायलाक—अब मैं दावे से बाज आता हूं सिर्फ दूना रुपया लेने पर छोड़ दूंगा।

कासिम—मुझे मन्जूर है, यह ले रुपया मौजूद है।

शीरीं—ठैरिये साहेब! आपको बड़ी जल्दी पड़ी है। इस से जुरमाना वसूल करने दीजिये। इसके साथ पूरा इनसाफ बरता जायगा। सुन, ऐ यहूदी! एक क़तरा खून का जिस्म से गिरने न पाये और न गोश्त आध सेर से कमोबेश तरशे।

शायलाक—मैं गोश्त नहीं लेता हूं। सिर्फ दुगना रुपया लेकर छोड़ता हूं।

कासिम—अच्छा ले, यह रुपया मौजूद है।

शीरीं—ठैरिये साहेब, आपको बड़ी जल्दी पड़ी है। यह अदालत में रुपया लेने से इनकार कर चुका है। इससे जुर्माना वसूल करने दीजिये। ऐ यहूदी, कानून की कए गिरफ्त तुझपर

यह है, कि, कोई बुग़दाद का आदमी बुग़दाद के रहने वाले की जान लेने का हीलतन या सरीहन बंदिश करे, तो बुग़दाद के कानून के मुताबिक उसकी आधी जायदाद सरकार की है और आधी जायदाद वह शख्स पाने का मुस्तहक है, जिसके वास्ते वह बंदिश की गयी हो। तूने भी एक बुग़दाद के बाशिंदे की जान लेने का क़स्द किया था; इस लिये यह क़ानून तेरे साथ बरता जायगा। ले, ऐ यहूदी। देख कैसा नाजुक वक्त तेरे ऊपर आ पड़ा है। तू जो अभी इनसाफ इनसाफ पुकार रहा था; अगर यहां का मुनसिफ जज इनसाफ से काम ले, तो तू कहीं का न रहे। अब तू अपना सर हाकिम के आगे झुका; रहम का ख्वास्तगार हो और इन्साफ के लफ्ज़ को भूल जा।

मसऊद—यहूदी, यहां आ मैं तुझे एक तदबीर बताऊं।

शायलाक—हां हां बताओ, ऐ मेहरबान।

मसऊद—देख तू जजसाहेब से कह दे कि तुझे खुदही फांसी चढ़कर मर जानेका हुक्म देवें। अब तेरा मालो असबाब तो सब ज़ब्त हो जायेगा, फिर तू उसे कहां से पायेगा? ले खाली गला घोंटने को तो मैं मौजूद हूं।

जज-क्यों शायलाक, जवाब दे।

शायलाक—जब आप मेरी कुल जायदाद जब्त करते हैं, तो मेरी जान पहिले ही ले चुके। अब मुझे हुक्म दीजिये कि मैं फाँसी लगाकर मर जाऊं।

मसऊद--हां हां, जल्द इसे फाँसी का हुक्म दीजिये। जहन्नुम की डोरी से झूला झुलाना चाहिये।

शीरीं—क्यों साहेब, आप लोग किस कदर इस यहूदी पर रहम कर सकते हैं?

कासिम—हम इसके निस्फ जायदाद का मुवाविज़ा सरकार को अदा करने पर राज़ी हैं। और दूसरा हिस्सा भी उसे वापस दिया जायगा। मगर यह एक इक़रारनामा लिख दे कि अपने मरने के बाद कुल जायदाद अपने दामाद मुहसिन व अपनी लड़की तिलहा को दी जाय।

शायलाक—यह तो मैं कभी न लिखूंगा।

मसऊद—सुन, सुन, तुझे एक बात कहता हूं, अगर तू माने।

शायलाक—हां हां, कहिये।

मसऊद—देख, वह सत्यानाश और चौपट स्थान इसी रास का नाम है और वह नजूमी मैं ही हूं।

शायलाक—ओ कम्बख्त! वह नजूमी तूही है, क्या तूही?

मसऊद—तो अब तू मेरा क्या कर सकता है।

जज—शायलाक! अगर तुम अपनी जायदाद अपने दामाद और अपनी लड़की के नाम न लिखोगे, तो तुम्हारे मालो जान की उसके आगे कुछ हक़ीकत नहीं।

शायलाक—खैर, लीजिये मन्जूर है। मगर यहां मेरा दम घबराता है; अगर थोड़ी देर और ठहरूंगा तो मर जाऊंगा। (ज़ार से) आप इक़रारनामा लिख कर मेरे पास भेज दें मैं दस्तखत कर दूंगा।

जज—अच्छा इसको जाने दो।

शायलाक—वाह वाह, अच्छा इनसाफ हुआ। मेरा ही झगड़ा साफ हुआ। (जाना)

जज—वकील साहेब, मैं आपकी नाज़ुक ख्याली की दाद देता हूं; बेशक आप अहले कमाल हो।

शीरीं—हुज़ूर का बलंद एक़बाल हो। बन्दा नाचीज़ है, मुझे क्या तमीज़ है।

जज-ज़ार और कासिम ! वकील साहेब परदेशी हैं, इनको खुश करो, तुम इनके एहसान से ताउम्र सुबुकदोश नहीं हो सक्के।

कासिम-दुरुस्त है हुजूर !

जज-कचेहरी बरखास्त (सबका बारी बारी से जाना)

अंक तीसरा। सीन सातवां।

महल।

शीरीं-तकदीर आपकी मेरी तदबीर हो गई।
फज़ले खुदा से दूर यह तकसीर हो गई।
मसऊद-तदबीर इस तासीन की बेपीर हो गई,
पत्थर पै नक्श आपकी तहरीर हो गई।

कासिम-छः हज़ार जो यहूदा के देने को लाया हूं, वह आप बतौर मेहन्ताना क़बूल फरमाइये।

शीरीं-जिसने मुझे बज़रिया वक़ालत रवाना किया; उससे मैंने सब कुछ पा लिया।

कासिम-यह न होगा। अगर रुपया नहीं लेते, तो बतौर निशानी कोई चीज और तलब कीजिये।

शीरीं-और तो मैं इस वक्त क्या मांग सकता हूं। खैर, आप अपनी अँगूठी दे दें।

कासिम-(अलग होकर) बड़ा गज़ब हुआ। इसे देते हुए मेरा दिल माना होता है। (शीरीं से) आप कोई दूसरी उम्दा चीज़ पसंद कीजिये।

शीरीं-नहीं, मुझे और किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। मैं यह भी नहीं मांगता। मगर आपने खुद इसरार किया इस लिये मैं ख्वाहतगार हुआ।

कासिम—आप यह यक़ीन जानिये कि अँगूठी मेरी नेक असमत बीबी की निशानी है। वरना इसके देने में मुझे क्या गिरानी है।

शीरीं-जी हां, ऐसे फ़िक़रे अकसर बहानाबाज़ लोगों के पास हर वक्त गढ़े हुए मौजूद रहते हैं। अगर आपकी बीबी आक़ला होंगी, तो जो एहसान आपके दोस्त के साथ किया है; हमेशा के लिये खुश रहेंगी। खैर, आपको उज्र है, तो मैं जाता हूं।

ज़ार—ठैरिये, ठैरिये, साहेब! भाई कासिम, बीबी के ख्याल से इनकी बात ज्यादा मानो। इन्हों ने बड़ा एहसान हमारे साथ किया है। अपनी बीबी को समझा लेना क्या कोई बड़ी बात है?

कासिम—आपकी खातिर से क्या दूर है। जनाब वकील साहब, मेरे उज्र को माफ़ कीजिये; अँगूठी ले लीजिये। (अँगूठी ले लेना)

सलीमा—जनाबमन, मुझे भी कुछ इनायत कीजिये।

ज़ार—आप भी कोई चीज पसंद कर लें।

सलीमा—तो आँ जनाब की (मसऊदकी) अँगूठी दे देवें।

मसऊद—वाह वाह जी, यह तो मेरी जान के साथ है।

कासिम—जल्द दे दे, बड़ा वाहियात है।

मसऊद—हुक्म आक़ा से बन्दा मजबूर है। वरना मुझे कब मंजूर है। (अगूठी देकर) अच्छी तहरीर की जो मेरी भी अगूठी लेने की तदबीर की।

शीरीं—अब मैं इजाज़त चाहता हूं।

ज़ार—मैं बखुशी रुखसत देता हूं।

शीरीं—खुदा हाफिज (सलीमा व शीरीं का जाना)

मसऊद—हुजूर, बेअदबी माफ। अब तो बहुत दिन हुआ मालूम नहीं कि सलीमा का क्या हाल है। हम यहां आये कहीं

और रंग न बदल जाये।

कासिम—वाह रंग की खूब सुनायी; पागल हुआ है सौदाई।

मसऊद—क्यों भाई! क्या बुरी सुनायी? मुझसे काले की जगह कोई गोरा आ जाय, तो क्या हो जाय?

कासिम—बस बेहूदा मत बक।

मसऊद—बेशक।

कासिम—भाई ज़ार! आपने बहुत तकलीफ उठाई। अब चलिये, चंद रोज मिश्र में आराम कीजिये। जब तक आपके तिजारती जहाज़ की खबर न आये, वहीं क़याम कीजिये।

ज़ार—मुझे आप की हमराही क़बूल है।

मसऊद—तब तो मेरा भी मतलब हुसूल है।

कासिम—मसऊद, बंदरगाह पर जाओ, रवानगी के लिये जहाज़ ठहराओ। जब तक हम शायलाक से इकरारनामे पर दस्तखत करा कर आते हैं।

मसऊद—बहुत खूब। तो मैं राह देखता हूं। (सबका जाना)

अंक तीसरा। सीन आठवां।

लास्ट महल—बारादरी।

मुहसिन—नहीं फसले खिजां जिसमें, गुलिस्तां इसको कहते हैं।
परी गुलगश्त करती है परिस्तां इसको कहते हैं॥

वाह वाह, क्या बागो बहार है; हवा भी आज कैसी खुशगवार है। जिससे मालूम होता है कि भाई कासिम जल्द आने वाले हैं।

तिलहा—लेकिन मकान की रौनक मकान से होती है। अगर प्यारी शीरीं भी यहां होती तो क्या ही लुत्फ होता।

मुहसिन--वाक़ई, शीरीं के न होने से बिलकुल बेरौनक़ी है। तुमने इस वक्त उनकी याद दिलाकर मेरे दिल को अफ़सुरदा कर दिया।

तिलहा--इस वक्त उनका ख़याल आ जाने से मेरा भी दिल घबरा रहा है। अच्छा, म एक गाना गाती हूं; आपका दिल बहलाती हूं:-

गाना।

मैंतो सइयां की प्यारी दुलारी, उमर मेरी बारी। नजर मतवारी, हो नजर कर बारी। मैं तुझ पर जान शान बरतर बार बार कर बात प्यार की। मैं तो सइयां ॥०-

नैन वही सोहावने हैं जिस में होवे लाज।
बिषभरे जो नैन प्यारे आवें कौने काज॥
सुनो दिल जान, तेरे कुरबान, नजर का बान,
इधर मत तान, लगे कारी जी में बान॥ मैं तो०—

मुहसिन--प्यारी! अगर मेरी नज़र ख़ता न की, तो देखो वह शीरीं की सवारी आती ह।

तिलहा—बेशक, यही मालूम होता है। लीजिये, वह खुद आ गयीं। (आना शीरीं व सलीमा का)

शीरीं—ऐ मेरे अजीज मेहमानों! खुश तो हो?

मुहसिन और तिलहा--आपकी दुआ से।

शीरीं--मैं तुम्हें खुश खबरी सुनती हूं कि मेरी दुआ मुस्तेज़ाब हुई। शौहर और उनके दोस्त अब आते होंगे।

मुहसिन—निहायत खुशी का मुकाम है; दुवाए खैर इसीका नाम है। (आना मसऊद का)

मसऊद--आदाब बजा लाता हूं।

शीरीं--क्यों मसऊद, आये खैर से?

मसऊद--आ तो गये ख़ैर से या सैर से।

शीरीं—वह कहाँ हैं?

मसऊद--वह आहिस्ता आहिस्ता आते हैं। मगर मुझको अपनी बीबी का इस्तेयाक जल्दी खींच लाया।

शीरीं—बयान कर मुकद्दमा क्योंकर हुआ?

मसऊद--अजी न पूँछिये। अगर मैं न होता तो वह बिचारे जान से मारे जाते। मैंने हीं तो उनकी जान बचायी।

शीरीं--तूने क्योंकर जान बचायी?

मसऊद--मैंने ऐसी ऐसी बहस और ऐसे ऐसे फिक़रे जज साहेब के सामने पेश किये कि जज साहेब भी अश अश करने लगे। बल्कि फरमाने लगे:—

Well Mr. masud, you are just like Babu jogendronath Govtt. Pleader. (कासिम का आना)

शीरीं--मरहबा, मरहबा। आओ प्यारे कासिम।

कासिम—प्यारी! यही मेरे दोस्त ज़ार हैं, ख़ुदा ने फजल किया।

शीरीं—मैं आपकी तशरीफ आवरी का शुक्रिया अदा करती हूं।

ज़ार—मैं भी बड़े अदब से ख़ुशी ज़ाहिर करता हूं कि आपके अस्ताने बलंद काशाने में सरफ़राज़ हूं।

मुहसिन—भाई कासिम व भाई ज़ार, मैं आपको देख कर बड़ा ख़ुश हुआ।

कासिम—दोस्त मुहसिन, मैं तुम से बहुत शाद हूं कि बाद मेरे तुम यहाँ के मुहाफिज रहे।

(मसऊद और सलीमा का इशारे में झगड़ना)

सलीमा-- अरे बोलै बोल, क्यों नहीं बताता।

मसऊद--बता तो दिया। फिर सर क्यों खाती है ?

शीरीं--तुम लोगों को रोज लड़ना ही रहता है। आये दिन लड़ाई शुरू होती है, क्या मामिला है ?

मसऊद--सलीमा ने मुझे एक मामूली सी अँगूठी बुगदाद जाते वक्त दी थी, वह मांग रही है।

सलीमा—बीबी, मैंने अपने शादी की अँगूठी मसऊद को दी थी और इसने क़सम खाकर कहा था कि मरते दम तक इसे जुदा न करूंगा। अब कहता है कि किसी वकील के मोहर्रिर ने ले ली है। मैं खूब जानती हूं कि इस ने किसी औरत को दे दी है।

मसऊद--हरगिज नहीं। मैंने वह अँगूठी एक मोहर्रिर को दी, जो उसके हमराह हम उम्र जवान लड़का था

शीरीं—वाकई तूने सख्त ग़लती की। अपनी प्यारी बीबी की निशानी खो दी। देखो, मैंने एक अगूठी अपने शौहर को बतौर निशानी दी है। वह उसको जान से ज्यादा अज़ीज रखते होंगे।

मसऊद--वाह, बिसमिल्लाह तो उन्हीं से हुई है। वह जब अपनी अँगूठी वकील को मेहनताने में दे चुके, तो मेरी अँगूठी मोहर्रिर को शुकराने में दिलवा दी।

शीरीं--तू ग़लत कहता है।

मसऊद—झूठ से मुझे क्या मिलता है।

शीरीं-- हमें क्योंकर यकीन हो ?

मसऊद—उन्हीं से पूछ लो।

शीरीं--प्यारे शौहर ! जो अँगूठी मैंने तुम्हें दी थी वह कहां है ?

कासिम--(अलग) हाय ! अब मैं क्या जवाब दूं।

लाजिम था कि, अपना दाहिना हाथ काट डालता तो जवाब देता कि, जब तक मेरा बस चला, उसकी हिफाजत की। जब हाथ ही कट गया तो मजबूर रहा। प्यारी बीबी ! मैंने अँगूठी उस वकील को मेहनताने में दी है, जिसे तुमने भाई ज़ार के मुक़द्दमे की पैरवी के लिये मिश्र से भेजा था। जिसकी वजह से वह रिहा हो गये।

शीरीं—मैंने किसी को न भेजा था। बातें बनाना छोड़ दो। क़सम खाकर कहती हूं कि तुमने अँगूठी एक नौजवान औरत को दे दी है, जिसे तुम प्यार करते हो।

कासिम—हाँ हाँ क़सम न खाना। यह क्या गजब करती हो। मैं सच कहता हूँ कि अँगूठी किसी औरत को नहीं दी।

गाना।

शीरीं—अजी लाओ मुन्दरिया मोरे सइयाँ सँवरिया मैं न मानूं रे। प्यारे कहाँ गँवाई, बताओ बताओ, मोरे सइयाँ, मुँदरिया बताओ॥

मसऊद—लाख कहीं मैंने एक न मानी, मुँदरिया सुदरियाँ डगर गँवायी॥ अजी लाओ० —

मैं न कहता था, मैं न कहता था, क्यों भला ?

शीरीं—मैं तो जानती थी।

मसऊद—रंडी एक मुफ्ती थी।

सलीमा—वाहजी वाह।

मसऊद—वाहजी वाह मियां।

सलीमा—वाह जी वाह मियां, वाहजी वाह मियां, वाह।

शीरीं—सुनिये, वह अँगूठी जिस औरत को तुमने दी है उसने किसी मर्द के हवाले की है। जो कई रोज से मेरा मेहमान है। उस अँगूठी में तासीर पिनहां है, जिसके पास वह आती है मेकनातीसी

असर दिखाती है। बन्दी उसी की हो जाती है। अब मैं जाती हूँ; उस मर्द को तुम्हारे पास भेजती हूँ। ताकि तुम भी देख लो कि कहीं वह वकील तो नहीं है?

मसऊद-अगर शीरीं उस वकील की हो गयी, तो कहीं ऐसा न हो कि सलीमा और मुहर्रिर से भी कुछ गड़बड़ न हो। पर मैं तो कहीं का न रहूंगा। क्यों ऐ प्यारी बीबी, नेक असमत; यानी बहुत बहुत पाक इफ्फत! तेरी नेक असमती का तो मुझे क़यामत तक भरोसा है। मगर यह तो बताओ कि उसके साथ कोई मोहर्रिर तो नहीं है।

सलीमा-यह तो मैं नहीं जानती।

मसऊद-फिर तू क्या जानती है?

सलीमा-इतना कि एक तरहदार हसीन मर्द उस वकील के साथ है, जो कई दिन से शीरीं का मेहमान है।

मसऊद-तो बस ठंडा हो जाना चाहिये। क्यों जनाब! अब रंज व गम करने से क्या फायदा। कोई दूसरी शादी कर-लीजिये। हर गली कूँचे में तो शादी की दुकानें खुली हैं। यहाँ नहीं, वहाँ सही।

ज़ार-तू तो बड़ा वाहियात है। यह कौन मौका दिल्लगी का है?

कासिम-अफसोस! यह क्या वारदात है, कुछ समझ नहीं पड़ता।

ज़ार-भाई कासिम, घबराओ नहीं। खुदा आसान करेगा।

(शीरीं का बलिबास वकील आना)

कासिम-आह! अब तो जीना बेकार है। ऐ वकील! तू बड़ा मक्कार है। तूने मुझे दगा से धोका दिया; अब इस जिन्दगी से मरना बेहतर है।

(कासिम का खंजर उठाना, ज़ार का रोकना, शीरीं का

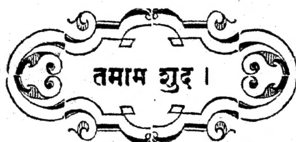
बलिबास असली होना। कासिम का शीरीं को गले लगाना।

गाना।

शुक्र तेरा है ऐ बारी, तेरी है कुदरत सारी।
तू है खल्लाक आलम, तू है रज्जाक आलम।
कौन है तेरा सानी, है ज़ात तेरी लासानी।
हो मुनकिर तेरी कुदरत का तो बेशक है नारी। शुक्र०-
दे नेकी से दिलको रग़बत। बदी से हो हम को नफरत॥
हो हमपर फजले रब्बानी। बस तर्क हो कार शैतानी।
हो जालिम की पामाली। बदकार से दुनिया खाली।
ऐ दावर सिक्का नेकी का ता हश्र रहे ज़ारी॥
था बेशक खुश नीयत कासिम।
कौलपर ज़ार अपने क़ायम।
दोनों को मिला इसका समरा।
ईमांदारी का था समरा।
महमूद बना था जालिम।
आखिर को हुआ वह नादिम।
बे दर्द यहूदी जालिम की किसतरह हुई ज़िल्लत ख़ारी॥ शु०-
लो ख़तम हुआ किस्सा अहसन।
नेकी का मिला हिस्सा अहसन।
की अहले सखुन ने जो इमदाद।
मेहनत की सरासर पाई दाद।
ऐ आजिज़ो कम्तर अहसन।
मुहफिल में झुका सर अहसन।

है खालिक़ बारी, जिसके करम से रौनक है सारी॥ शु०-
(ड्रापसीन का आहिस्ता आहिस्ता गिरना; सबका सिर झुकाना)





सिर्फ कवर और आखिरी ३२ पेज बी. एल्. पावगी द्वारा
हितचिन्तक प्रेस, रामघाट, बनारस सिटी में मुद्रित।

गायन की एक नयी पुस्तक ! गायन की एक नयी चीज़ !

संगीत थियेटर ।

यों तो हिन्दी भाषा में गायन की अनगिनती पुस्तकें हैं, और सभी एक दूसरे से बढ़कर हैं। परन्तु 'संगीत थियेटर' हिन्दी भाषा में बिलकुल ताजी और नयी चीज है । प्रसिद्ध हारमोनियम मास्टर बाबू बच्चेलाल ने इस अपूर्व्व संग्रह को तैयार किया है । इसमें जितने गायन लिखे गये हैं; सभी ताल और धुन के साथ हैं । जिस प्रकार इसका नाम 'संगीत थियेटर' है, उसी प्रकार इसमें थियेटरों के प्रसिद्ध प्रसिद्ध खेलों के चुने चुने और नये नये गायन भी लिखे गये हैं । असीरे हिर्स, सफेद खून, महाभारत, खूबसूरतबला, भूलभुलइयाँ, सैदहवस, शहीदेनाज़, ज़हरीसांप, सिलवरकिङ्ग, अलीबाबा, कालीनागिन, मुरीदेशक, बाग़बेदाद, गुलरूज़रीना, चित्राबकावली, हरिश्चन्द्र, खूनेनाहक के अतिरिक्त और और जितने प्रसिद्ध खेल हैं, उनके चुहचुहाते और प्रेम रस में डूबे हुए कोई गायन ऐसे नहीं हैं, जो इस पुस्तक में न हों । संग्रहकर्त्ता ने इसमें यहाँ तक परिश्रम किया है कि, कलकत्ते की मशहूर तवायफ और ...यका गौहरजान के भी चुने हुए गाने इसमें भर दिये हैं । ...यादा क्या लिखें, यदि आप पुस्तक को केवल देखही लें, तो ... उसे नहीं छोड़ सकते । कारण कि, उसके ऊपर गौहरजान ...ा सुन्दर चित्र सोने में सुगन्ध का काम कर रहा है । दाम ।)

मिलने का पता :-

जयरामदास गुप्त,

उपन्यास बहार आफिस;

काशी । (बनारस)

अस्ली

थियेट्रिकल नाटक।

मय गाने और ड्राम के.

दुश्मने ईमान	...	...	...	॥
शरीफ बदमाश	...	...	...	॥
काली नागिन	...	...	...	॥
ज़हरी सांप	...	...	...	।≡
महाभारत	...	...	...	।=
शहीदेनाज़	...	...	...	।=
ख्वाबेहस्ती	...	...	...	।=
खूबसूरतबला-(दूसरी बार छपा है)			...	।=
सुफेद खून	...	..	...	।=
भूलभुलइयां-(दूसरी बार छपा है)			...	।=
सैदहवस	...	...	...	।=)
दिलफ़रोश-(दूसरी बार छपा है)			...	।=)
खूने नाहक	...	...	...	।=)
कलियुगागमन	...	...	...	=)
संगीत थियेटर-(थियेटर के चुने हुए गानों का अ' संग्रह मय फोटो गौहर)			...	।)

मिलने का वही प्रसिद्ध पता-

जयरामदास गुप्त,

उपन्यास बहार आफिस;

काशी। (बनारस)